किमत ₹ 10

अक्तुबर 2014

दादावाणी

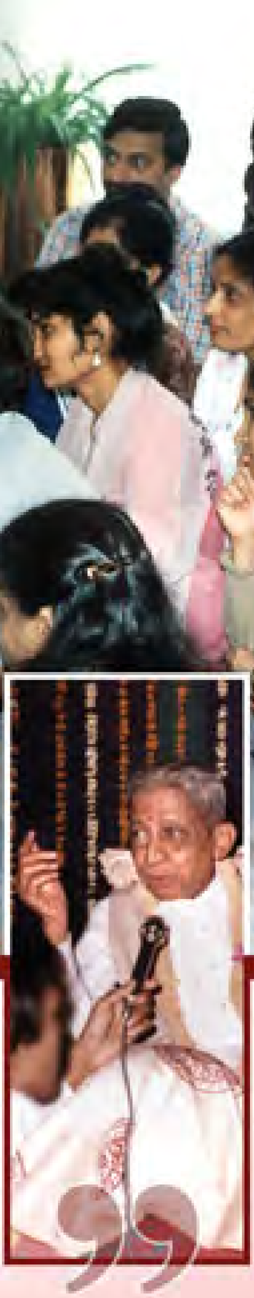

सत्संग किसलिए है?
सभी के समाधान के लिए, आपके पज़ल सॉल्व करने के लिए है।
मोक्ष मार्ग को जानने के लिए है।
वह तो हमारे साथ सत्संग में बैठो,
तो आपका क्लेश चला जाए ऐसी आपको समझ दें।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९ अंक : १२
अखंड क्रमांक : १०८
अक्तूबर २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सत्संग का माहात्म्य

संपादकीय

कोटि जन्मों के पुण्यों से, इस कलिकाल में हमें अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) की कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है और तभी से आत्मानुभव की प्रतीति शुरू हुई। लेकिन आगे की प्रगति के लिए ज्ञानी के परिचय में रहकर इस ज्ञान को बीरीकी से विस्तार पूर्वक समझ लेना ज़रूरी है।

जिस प्रकार बीज को ज़मीन में बो देने के बाद उसकी देखरेख करने के लिए (लक्ष्य प्राप्ति करने के लिए) पानी, खाद वगैरह देना पड़ता है। उसी प्रकार ज्ञान प्राप्ति के बाद जागृति रूपी पौधे को पाल-पोसकर बड़ा करने के लिए सत्संग रूपी खाद-पानी से सींचना पड़ता है, तभी पौधा बड़ा होता है। ज्ञानविधि के बाद विशेष रूप से आत्मा में रहने के लिए सत्संग में आना बहुत ज़रूरी है। जिस प्रकार यदि व्यापार पर ध्यान नहीं दिया जाए तो व्यापार में बरकत नहीं आए, कई लोग कहते हैं कि 'मैं घर पर ही सत्संग कर लेता हूँ। किताबें पढ़ लेता हूँ!' तो फिर किसी को स्कूल में जाने की क्या ज़रूरत है, घर बैठे ही पढ़ लें तो नहीं चलेगा? जितना महत्वपूर्ण स्कूल में जाना है, उसी प्रकार सत्संग में आना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। दादाश्री तो गारन्टी देते हैं कि आप सत्संग में आओगे तो व्यापार में या व्यवहार में कुछ नुकसान नहीं होगा। यह सत्संग तो सभी जलन और दुःख को शांत कर देता है, जबकि कुसंग जलन पैदा करता है। कुसंग का रंग चढ़ने में ज़्यादा देर नहीं लगती और उस कुसंग के दाग़ कई जन्मों तक नहीं जाते।

दादाश्री कहते हैं कि सत्संग यानी 'खुद के गाँव,' में 'खुद के घर' पर जाने का रास्ता। सत्संग, वह खुद की बात है, जबकि बाकी सब पराया है। जैसे-जैसे ज्ञानीपुरुष का सत्संग शब्दार्थ में सुनता है, वैसे-वैसे उनका परिचय प्राप्त करके भावार्थ पकड़ना पड़ता है। ठेठ परमार्थ तक पहुँचने के लिए ऐसा पुरुषार्थ करना करना पड़ता है ताकि ज्ञानीपुरुष राज़ी हों और उनकी कृपा उतरे। एक तरफ यह ज्ञान है और दूसरी तरफ यह संसार। बलिहारी दादाश्री की, कि अपने संसार को बिल्कुल भी हिलाए बगैर अंदर आत्मदीप प्रकट कर दिया और संसार छुड़वा दिया बाकी यह जगत् एक क्षण के लिए भी कैसे विस्मृत हो सकता है? लेकिन जब यह सत्संग मिलता है, तब जगत् आसानी से विस्मृत रहता है। ज्ञानी की मौजूदगी से ही रियल आत्मा और रिलेटिव आत्मा (चित्त) आसानी से स्थिर हो जाते हैं और चित्त शुद्ध होता ही रहता है।

दादाश्री कहते हैं कि जीवन में दो प्रकर के ध्येय (लक्ष्य) नक्की कर लेने चाहिए; पहला, संसार में इस तरह जीना चाहिए कि किसी को दुःख न हो और दूसरे, ध्येय में तो प्रत्यक्ष ज्ञानीपुरुष से ज्ञान प्राप्त करके, हमेशा सत्संग में रहना।

आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद, महात्माओं को पूर्णपद की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए? ज्ञानी के कहे अनुसार जीवन बिताना है, ज्ञानी की विसिनिटी में (आस-पास) में रहना है। अक्रम विज्ञान द्वारा हमें मोक्षमार्ग तो मिल गया है। अब उस अंतिम ध्येय (लक्ष्य) तक पहुँचने के लिए अविरत रूप से सत्संग रूपी सिंचन की ज़रूरत है। सत्संग वह आत्ममय जीने के लिए प्राणवायु की तरह काम करेगा।

प्रस्तुत संकलन में यह सत्संग क्या है, किसलिए उसका महत्व है, उसकी विस्तृत समझ दादाश्री के ही शब्दों में यहाँ आलेखित हुई है। जिसका अध्ययन हमें सत्संग का माहात्म्य समझकर, अपना जीवन सत्संग मय बनाने के पुरुषार्थ में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सत्संग का माहात्म्य

सत्संग की आराधन से प्राप्त हो शांति

प्रश्नकर्ता : मन की अशांति दूर करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : मन की शांति तो, इस सत्संग में बैठने से, सत्संग के दो शब्दों का आराधन करने से हो जाएगी, वर्ना यों ही तो शांति नहीं हो जाती न? मन किसलिए अशांत हो गया है उसका पता लगाना पड़ेगा आपको। उसका पता लगाना पड़ेगा या नहीं लगाना पड़ेगा? शादी नहीं की इसलिए अशांत हुआ है या पढ़ाई नहीं की इसलिए अशांत हुआ है? उसका कोई कारण तो ढूँढ निकालना पड़ेगा न?

नासमझी से ही यह सारी अशांति है। इसीलिए तो मैं यह जो समझ दे रहा हूँ न, उतना कर के देख, तुझे शांति हो जाएगी। इसमें ज्ञान नहीं (लिया) है लेकिन इससे मन की शांति हो जाती है और यदि ज्ञान दूँ और पाँच आज्ञा दूँ और उनका पालन करे, तब उसे परमानंद रहेगा।

सर्व दुःखों को अलविदा, वही खरा सत्संग

प्रश्नकर्ता : इस संसार की चिंता किस तरह मिटेगी?

दादाश्री : यहाँ सत्संग में रहने से। कभी सत्संग में आए हो?

प्रश्नकर्ता : दूसरी जगह सत्संग में जाता हूँ, लेकिन यहाँ तो एक-दो बार ही आया हूँ।

दादाश्री : जिस सत्संग में जाने से चिंता बंद नहीं होती तो वह सत्संग छोड़ देना चाहिए। बाकी, सत्संग में चिंता बंद होनी ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जितनी देर वहाँ बैठे रहते हैं, उतनी देर शांति रहती है।

दादाश्री : नहीं, उसे कहीं शांति नहीं कहते। उसमें शांति नहीं है। ऐसी शांति तो हम गप्प सुनें तब भी रहेगी। सच्ची शांति तो निरंतर रहनी चाहिए, जानी ही नहीं चाहिए। अतः जहाँ चिंता हो, उस प्रकार के सत्संग में जाएँ ही क्यों? सत्संगवालों से कह देना चाहिए कि 'भाई, हमें चिंता होती है, इसलिए अब हम यहाँ पर नहीं आएँगे, वर्ना आप कुछ ऐसा इलाज कीजिए कि चिंता नहीं हो।'

प्रश्नकर्ता : ऑफिस में जाऊँ, घर आऊँ, फिर भी कहीं मन नहीं लगता।

दादाश्री : ऑफिस में तो आप नौकरी के लिए जाते हो और तनख़्वाह तो चाहिए न? घर संसार चलाना है, इसलिए घर नहीं छोड़ देना है, नौकरी नहीं छोड़ देनी है। लेकिन जहाँ पर चिंता नहीं मिटे, वह सत्संग छोड़ देना। दूसरा नया सत्संग ढूँढना, तीसरे सत्संग में जाना। कई तरह के सत्संग होते हैं, लेकिन सत्संग से चिंता जानी चा।

सत्संग किया ऐसा कब कहलाता है कि जहाँ सभी दुःख जाएँ तब, यदि दुःख नहीं जाएँ तब तो कुसंग किया कहलाएगा। चाय में चीनी डालें तो मीठी ही लगेगी न? सत्संग से सर्वस्व दुःख जाते हैं।

सुख की प्राप्ति, ज्ञानी कृपा से

प्रश्नकर्ता : ज़िंदगी में सुखी होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तुझे कैसा सुख चाहिए? विनाशी चाहिए या 'इटरनल' (शाश्वत) चाहिए?

प्रश्नकर्ता : 'इटरनल'।

दादाश्री : यदि 'इटरनल' सुख चाहिए तो तू यहाँ पर आना। जिसके मिलने के बाद तेरे पास से वह सुख जाएगा ही नहीं। और विनाशी सुख चाहिए तो उसका मैं तुझे रास्ता बता दूँगा। यहाँ कभी-कभी आते रहना और दर्शन कर जाना। मैं आशीर्वाद देता रहूँगा। तेरा विनाशी सुख बढ़ता जाएगा।

सत्संग से सुलझे गुत्थी-क्लेश

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस संसार की उलझन में से कैसे निकला जा सकता है?

दादाश्री : यहाँ आओ तो आपकी उलझनें निकाल देंगे, दो-तीन दिनों तक आओ तो उलझनों में से बाहर निकाल देंगे। ये डॉक्टर भी ओपरेशन करने से पहले थोड़ा टाइम लेते हैं। दो दिन पहले कुछ जुलाब की दवाई देते हैं, पेट को साफ करने के बाद ओपरेशन करते हैं, उसी तरह हमारे यहाँ साफ करने के बाद ओपरेशन होगा, फिर उलझनें निकल जाएँगी। फिर हमारे कहे अनुसार चलेगा तो फिर से उलझनें नहीं आएँगी। वर्ना यह जगत् तो पूरा उलझनों से ही भरा हुआ है। भले ही कितने भी शास्त्र पढ़े, कुछ भी करे, फिर भी उलझनें जाएँगी नहीं।

प्रश्नकर्ता : क्लेश बगैर का जीवन किस प्रकार बने?

दादाश्री : वह तो हमारे पास सत्संग में बैठा करो, तो आपका संताप (क्लेश) चला जाए ऐसी सब समझ देते हैं। ये अंधाधुंधी से क्लेश पैदा हुआ है। नासमझी से ये सारे दु:ख कायम हैं, वर्ना दु:ख बिल्कुल हैं ही नहीं।

इसीलिए मैं कहता हूँ न, कि मेरे पास आ जाओ। यह जो मैंने पाया है वह आपको दे दूँ, आपका काम हो जाएगा और छुटकारा हो जाएगा। बाक़ी, (आत्मा को जाने बगैर) छुटकारा होगा नहीं।

यहाँ सब पूछकर, मन खुला करो

आप अपनी नासमझी के कारण इतना उलझते हो। उन उलझनों के लिए आपको मुझसे पूछना चाहिए कि मुझे यहाँ उलझन है, तो इसमें क्या करना चाहिए? इसलिए पूछना। उसके लिए हम सत्संग रखते हैं।

इसलिए मैंने यहाँ सब को छूट दे रखी हैं। मैंने कहा, 'हज़ारों प्रश्न पूछ सकते हो, अपने आप, आपका मन हल्का हो जाएगा। चाहे आप इस ज्ञान को समझ पाएँ या न समझ पाएँ मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं है।' यह ज्ञान कोई क्वॉन्टिटी (संख्या) इकट्ठी करने के लिए नहीं आया कि भाई, इसके द्वारा मुझे ऊँची गद्दी का स्थापन करना है। मुझे तो कुछ चाहिए ही नहीं यहाँ पर! मैं तो लघुत्तम भाव से रहता हूँ।

यहाँ आप सबकुछ पूछ सकते हो। कैसे हो, कैसे नहीं? सबकुछ पूछा जा सकता है। अन्य जगह ऐसा कुछ नहीं पूछा जा सकता। वहाँ कहेंगे, 'यहाँ व्यवहार की बात नहीं की जाती।' जहाँ सत्संग में जाते हैं, वहाँ ऐसी बातें नहीं होतीं है। लेकिन व्यवहार तो निश्चय का बेज़मेन्ट (नींव) है। बेज़मेन्ट के बगैर निश्चय हो ही नहीं सकता। व्यवहार भी साथ ही चलना चाहिए।

पज़ल सॉल्व करने के लिए यह सत्संग

प्रश्नकर्ता : सत्संग अर्थात् मन का खुलासा करना?

दादाश्री : मन जिन-जिन पहेलियों में उलझा हुआ हो, उन पहलियों का खुलासा करने से मन खुल जाता है। पहलियों का हल नहीं हो तो बेकार गया, फिर परेशानी ही है न?

सत्संग, किसलिए है? सभी के समाधान के लिए, आपके पज़ल सोल्व करने के लिए है! मोक्ष का मार्ग जानने के लिए है।

ऐसा माँगो कि जो शाश्वत रहे

एक संसार मार्ग और एक अध्यात्म मार्ग - दो ही मार्ग हैं। संसार मार्ग में डॉक्टर का वकील से नहीं पूछ सकते और वकील का डॉक्टर से नहीं पूछ सकते। और यहाँ तो अध्यात्म मार्ग है, इसलिए हमारे पास सभी कुछ पूछा जा सकता है। यहाँ जो पूछना हो वह पूछा जा सकता है और सारे ही स्पष्टीकरण-खुलासे मिलें, वैसा है। आपको कहना है कि 'हम आपके पास आए हैं और आपके पास जो है, वह हमें नहीं मिले तो उसका अर्थ क्या?' संसार से निस्पृह होकर जो एक मात्र सच्चा ढूँढने निकले हों, उन्हें यहाँ पर 'हमारे' पास से सबकुछ मिले ऐसा है! 'माँगो, जो माँगो वह दूँ ऐसा है यहाँ पर। लेकिन आपको माँगना भी नहीं आता। ऐसा माँगना कि जो कभी भी आपके पास से जाए नहीं। परमानेन्ट (कायमी) वस्तु माँगना। टेम्परेरी (विनाशी) माँगोगे तो वह कहाँ तक पहुँचेगा? ऐसा कुछ माँगो कि जिससे आपको शाश्वत शांति हो जाए, चिंता-*उपाधि* से हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाए। यहाँ तो मोक्ष मिलता है। यहाँ बुद्धि का उपयोग नहीं करोगे तो 'यह' प्राप्त करोगे। हमारा सत्संग दस-दस सालों से चल रहा है। उसमें वाद होता है लेकिन विवाद नहीं होता। यही एक स्थल है कि जहाँ बुद्धि काम नहीं करती।

सत्संग यानी आत्मा का संग

प्रश्नकर्ता : वास्तव में सत्संग यानी क्या?

दादाश्री : सत्संग यानी आत्मा का संग! दो प्रकार के संग : एक, कुसंग और दूसरा, सत्संग। सत्संग में आने से प्रकाश होता है, जलन बंद कर देता है और कुसंग जलन खड़ी करता है। पटाखे (हवाई का बारूद) हवा में उछालें, तब धोती जलती हैं और जला देती है, वैसा ही इस कुसंग का है इसलिए कुसंग को प्रत्यक्ष अग्नि समझना।

पूरा संसार कुसंग स्वरूप है और फिर कलियुग का प्रभाव! या तो अकेले बैठे रहना, या फिर यहाँ आकर सत्संग में पड़े रहना। कभी भी कुसंग में खड़े रहने जैसा नहीं है, लेकिन एक क्षण भी कुसंग को छूने जैसा नहीं है। वह तो विष स्वरूप है।

यह देखते हो न, बाहर तो ये सब? अपनी सारी मेहनत मिट्टी में मिला देता है कुसंग। यानी अपनी मेहनत व्यर्थ नहीं जाए, दिन व्यर्थ नहीं बीतें और सत्संग में रहा जा सके ऐसा करना चाहिए। 'इस' सत्संग की अधिकता रही तो काम हो गया। पूरे जगत् पर कुसंग का दबाव है। मंदिर या उपाश्रय में नहीं जा पाते, व्याख्यान में नहीं जा पाते और उसके लिए *कढ़ापा-अजंपा* भी करते हैं कि जाने की बहुत इच्छा है। मंदिर में भी नहीं जा पाते। कारण क्या है? क्योंकि कुसंग की भरमार में है, इसलिए वह जाने नहीं देता और अपने यहाँ तो सत्संग की ही भरमार और कैसे जगत् विस्मृत रहता है! सभी कुछ अनिवार्य है, लेकिन जिसके लिए सत्संग अनिवार्य हो, वह तो ग़ज़ब का पुण्यशाली कहलाता है और फिर वापस आपको अलौकिक सत्संग मिल रहा है। बाहर सभी जगह जगत् में अनिवार्य रूप से कुसंग ही है। अब अनिवार्य रूप से सत्संग आया है! अनिवार्य सत्संग और वह भी घर बैठे आता है!

इसलिए इस सत्संग में ही रहने जैसा है। अन्य कहीं मित्रता करने जैसी नहीं है। सत्युग में मित्रता थी, वह ठेठ तक की, पूरी ज़िंदगी भर मित्रता निभाते थे। अभी तो दगा देते हैं।

वैराग लाने के लिए लोगों ने किताबें लिखीं। अस्सी प्रतिशत किताबें वैराग लाने के लिए लिखीं, फिर भी किसी को वैराग नहीं दिखा। वैराग तो, यह ज्ञानीपुरुष एक घंटा बोले न तो जन्मोंजन्म वैराग याद रहे। इस ज्ञान से वैराग रहता है या नहीं रहता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रहता है। आज के सत्संग से बहुत ही फर्क पड़ गया।

दादाश्री : जब तक यह सत्संग नहीं हो, तब तक मनुष्य उलझता रहता है। ऐसी पज़ल खड़ी हो जाए, तब क्या करना चाहिए, वह पता नहीं होता। यह तो, जब पज़ल खड़ी होती है, तब दादाजी के शब्द याद आते हैं।

जिस प्रकार साबुन से मैल निकालने पर साबुन खुद का मैल छोड़ता जाता है। जबकि ज्ञानीपुरुष के पास हम जो सत्संग करते हैं, वह शुद्ध सत्संग कहलाता है। यानी कि ज्ञानियों का मैल हम पर नहीं चढ़ता और अपना मैल उतर जाता है।

'क्रमिक मार्ग में सत्संग मिला हो तो पाँच सौ सीढ़ियाँ चढ़ जाता है और एकाध कुसंग से हज़ार सीढ़ियाँ उतर भी पड़ता है। उसमें ठिकाना नहीं है, अत्यंत कष्ट पड़ते हैं और यह 'अक्रम मार्ग तो सेफसाइड (वाला) मार्ग, लिफ्ट में से गिरने का भय ही नहीं है न! और संसार में रहकर मोक्ष में जाया जा सकता हैं। चक्रवर्ती भरत राजा गए थे उस तरह से, लड़ाइयाँ लड़ते हुए, राज्य भोगते हुए मोक्ष!

ज्ञानीकृपा से प्रकट हो आत्म आनंद

प्रश्नकर्ता : और किसी जगह की बजाय यहाँ की चीज़ मुझे अलग लगती है। यहाँ पर सभी के चेहरे पर हास्य और आनंद अलग ही प्रकार का है, इसका क्या कारण है?

दादाश्री : आपको यह परीक्षा (जाँच) करना आया, वह बहुत बड़ी बात है। यह परीक्षा करना आसान नहीं है। यह तो 'वर्ल्ड' का आश्चर्य है! इसका कारण यह है कि यहाँ पर सबके अंदर की जलन बंद हो गई है और आत्मा का आनंद उत्पन्न हुआ है। यहाँ पर सच्चा आनंद प्राप्त होता है, उससे कितने ही जन्मों से पड़े हुए घाव भर जाते हैं। संसार के घाव तो भरते ही नहीं है न! एक घाव भरने लगे, तब तक तो दूसरे पाँच घाव हो जाते हैं! आत्मा के आनंद से अंदर सभी घाव भर जाते हैं, उससे मुक्ति का अनुभव होता है।

संग पर से पहचाना जाए सुख

यहाँ सत्संग निरंतर आनंद देनेवाला है और बाहर (अन्य) कहीं भी आनंद है ही नहीं। इसलिए कुछ चीज़ों में आनंद मानकर आनंद लेते हैं। 'समझे हुए' में से नहीं लेकिन 'माने हुए' में से आनंद लेते हैं। संसार के सुख तो रोंग बिलीफ़ से हैं। यह ज्ञान यदि होता न, तो भी कुछ चलता, लेकिन यह तो रोंग बिलीफ़ से आगे बढ़ता ही नहीं! विवरणपूर्वक उन सुखों को देखे न तो भी वे कल्पित सुख समझ में आ जाएँ, लेकिन यह तो जब तक रोंग बिलीफ़ नहीं जाती, तब तक उसी में सुख महसूस होता है।

सीधे संयोग मिलें तो सुख मिलता है और उल्टे संयोग मिलें तो दु:ख को निमंत्रण देता है। कोई व्यक्ति हो और उसे अगर जुआ का और शराबी के साथ शराब पीने का कुसंग मिले, तो वह संयोग उसे दु:खी करता है। और सत्संग में बैठे तो सुख मिलता रहता है। यह तो, व्यक्ति कौन से संग में है, उस पर से उसे कैसा सुख होगा, वह समझ में आता है।

कुसंग घटाए निश्चयबल को

निश्चयबल को काट देता है! अरे, इंसान का पूरा ही परिवर्तन कर देता है और सत्संग भी इंसान का परिवर्तन कर देता है। लेकिन एक बार जो कुसंग में चला गया हो, उसे सत्संग में लाना हो तो बहुत मुश्किल हो जाता है और सत्संगवाले को कुसंगी बनाना हो तो देर नहीं लगेगी। क्योंकि कुसंग वह

फिसलनवाला है, नीचे जाना है जबकि सत्संग का मतलब चढ़ना है। कुसंगी को सत्संगी बनाना हो तो चढ़ना होता है, उसमें बहुत देर लगती है और सत्संगी को कुसंगी बनाना हो तो तुरंत, एक पहचानवाला कुसंगी मिल जाए तो तुरंत सबकुछ ठिकाने(!) पर ला देता है। इसलिए किसी पर विश्वास नहीं कर सकते। जो कोई अपना विश्वासपात्र हो, उसीके संग घूमना चाहिए।

कुसंग ही पोइज़न है। कुसंग से तो बहुत दूर रहना चाहिए। कुसंग का असर मन पर होता है, बुद्धि पर होता है, चित्त पर होता है, अहंकार पर होता है, शरीर पर होता है। सिर्फ एक ही साल के कुसंग से होनेवाला असर तो पच्चीस-पच्चीस साल तक रहा करता है। यानी एक ही साल का कितना खराब फल आता है! फिर वह पछतावा करता रहे फिर भी छूट नहीं पाता और एक बार फिसलने के बाद और ज़्यादा गहराई में उतरते जाता है और ठेठ तले तक उतार देता है। फिर पछतावा करे, वापस लौटना हो फिर भी लौट नहीं सकता। अत: जिसका संग सुधरा, उसका सबकुछ सुधर गया और जिसका संग बिगड़ा, उसका सबकुछ बिगड़ गया। सब से बड़ा जोखिम कुसंग है। सत्संग में पड़े रहनेवाले को दिक्कत नहीं आती।

सत्संग (में) निरंतर मारता रहे वह अच्छा, लेकिन कुसंग (में) रोज़ाना दाल-चावल-लड्डू खिलाए तो भी काम का नहीं। एक ही घंटा कुसंग मिले तो कितने ही काल के सत्संग को जला देता है। इन जंगल के पेड़ों को बड़ा करने में पच्चीस साल लगते हैं, लेकिन उन्हें जलाने में कितनी देर लगती है? 'ज्ञानीपुरुष' तो कितना कर सकते हैं? रोज़ जतन करके जंगल में पौधे उगाते हैं और जतन करके बड़े करते हैं। उन्हें फिर सत्संग रूपी पानी पिलाते हैं। लेकिन कुसंग रूपी अग्नि को, उन पौधों को जलाने में कितनी देर (लगे)? सब से बड़ा पुण्य तो कुसंग नहीं मिले, वह है। कुसंगी क्या अपने को ऐसा कहते हैं कि हमारे ऊपर भाव रखो? उनके साथ तो दूर से ही 'खिड़की में से ही जय श्री कृष्ण' कहना चाहिए। सच्चिदानंद संग (दादा का सत्संग) क्या नहीं कर सकता? केवलज्ञान की प्राप्ति करवाता है!

सावधान रहो, कुसंग के संग से

प्रश्नकर्ता : लेकिन कुसंग अगर, कुसंग की तरह असर नहीं डाले तो वह कुसंग नहीं कहलाएगा न?

दादाश्री : फिर भी उसका विश्वास रखा जा सके ऐसा नहीं है। साँप पाला हो तो उसका विश्वास नहीं रख सकते। कब वह खुद के स्वभाव में चला जाए वह कहा नहीं जा सकता। वह तो, अपना यह सत्संग अच्छा है। चाहे कैसा भी पगला या बावला हो न, इनके (सत्संगी) के साथ पड़े रहना पड़े, तब भी आपत्ति मत उठाना। क्योंकि यह सत्संग है और (वह) कुसंग कब काट खाए, वह कहा नहीं जा सकता। एकाध उल्टा विचार अंदर घुस गया तो वह बीस सालों में भी नहीं निकलेगा। अगर अंदर उगने लगा तो बड़ा पेड़ बन जाए। कुसंग की बातें सारी मीठी होती हैं, एकदम घुस जाए ऐसी।

तू मुंबई में होटल में जाकर एक बार चाय पीकर आ। देखना मन पर कितना खराब असर हो जाएगा? और वे लोग फिर से मिलेंगे ऐसा नहीं है, लेकिन परमाणुओं का असर तो रहेगा।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ एक चाय से इतना असर होता है, तो...

दादाश्री : सिर्फ चाय का असर नहीं, वहाँ गया, सीढ़ियाँ चढ़ा, तभी से असर होने लगता है। इतनी-सी लहसुन की कली घी में डाले न, तो बाहर क्या होता है?

सत्संग से वृत्तियों का विलय

प्रश्नकर्ता : (हाँ वह तो ठीक है) लेकिन उसकी वृत्तिओं को हम कैसे बंद कर सकते हैं?

दादाश्री : वह तो हमसे (बगैर ज्ञान के) कुछ नहीं होगा। वह खुद सीधा होगा तो ही होगा।

प्रश्नकर्ता : तो उसकी वृत्तियाँ निकालने का रास्ता क्या? सत्संग?

दादाश्री : सत्संग के बिना तो और कोई उपाय नहीं है। कुसंग से ही ये सारी वृत्तियाँ ऐसी हो जाती है। आत्मा का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो वृत्तियाँ वापस घर आने लगती हैं।

निबेड़ा आएगा, सत्संग से

प्रश्नकर्ता : कुसंग में से सत्संग में जाना वह क्या प्रज्ञा का पुरुषार्थ कहलाता है?

दादाश्री : नहीं, प्रज्ञा वहाँ पर आती ही नहीं। वहाँ तो ऐसा कुछ पुण्य किया हो, वह पुण्य उस घड़ी ज़ोर लगाता है।

बाकी, मूल आत्मा तो किसी भी संग का संगी नहीं बनता। असंग ही है, स्वभाव से ही असंग है। जबकि लोग असंग बनने के लिए दौड़-धूप करते हैं। सत्संग व्यावहारिक तौर पर होना चाहिए। क्योंकि कुसंग और सत्संग ये दो प्रकार के जो भाव हैं, इनमें से जो यहाँ सत्संग में पड़ा रहेगा, उसका किसी दिन निबेड़ा आएगा। कुसंग में पड़े हुए इंसान का निबेड़ा नहीं आता।

सत्संग से विपरीत बुद्धि हो जाए सम्यक्

ज्ञानीपुरुष के पास यदि एक ही घंटा बैठे और सत्संग सुने तो उसे तुरंत ज्ञान नहीं हो जाता, (क्योंकि) बुद्धि (उसे) 'सेन्सिटिव' (संवेदनशील) रखती है। बुद्धि के दो प्रकार हैं: एक सम्यक् बुद्धि और दूसरी विपरीत। यहाँ पर जब सत्संग होता है, तब उसकी जो विपरीत बुद्धि होती है, वही 'टर्न' लेकर सम्यक् होती है। अनादिकाल से उसकी जो बुद्धि विपरीत थी, वह सम्यक् होने लगती है। जितनी सम्यक् हुई, उतना ही वह सम्यक् दर्शन की, सम्यक् ज्ञान की बात, सम्यक् चारित्र की बात को समझने के लिए तैयार हो जाता है। वह सम्यक् बुद्धि मोक्ष में ले जाती है।

यह अपना सत्संग, ये बातें, कभी भी सुनने में नहीं आए ऐसी चीज़ है। यह तो बुद्धि से परे का सत्संग कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानीपुरुष' के सत्संग के साथ सद्शास्त्र का पठन और मनन करना चाहिए न?

दादाश्री : वह ठीक है, लेकिन यदि ज्ञानी के सत्संग से फुल मार्क्स आ जाएँ, फिर पठन की ज़रूरत नहीं रही न? फुल मार्क्स आ जाने के बाद इन सबका पठन करेंगे तो 'बोदरेशन' (समस्या) बढ़ेगा बल्कि। अब इतनी सुंदर जागृति होने के बाद टाइम बेकार जाएगा।

बुद्धि की हद से बाहर, मिले विज्ञान

हम आपसे कह देते हैं कि यह विज्ञान आपकी बुद्धि से परे हैं, लेकिन वास्तव में पूरा जगत् विज्ञान ही है। लोग तो अभी तक बुद्धि से बाहर निकले ही नहीं हैं।

एक घंटे भी अगर इन बातों को सुने न तो, पता है इसकी क्या क़ीमत है? उसकी क़ीमत ऐसी नहीं है कि कोई आँक सके, उतनी सिर्फ एक घंटे की क़ीमत है। उस क़ीमत को समझना मुश्किल है। बुद्धि से बाहर की बात है। ऐसा संयोग मिलना ही मुश्किल है!

इस सत्संग में तो ऐसा आनंद आता है कि समाता नहीं। किसी को ऐसा रहता है कि इतना बड़ा जलप्रपात गिरता है और किसी को इतनी छोटी सी धारा गिरती है! क्या कारण है? बुद्धि का *बळापा* (कुढ़न-संताप) परेशान करता है। वह धीरे-धीरे निकल जाता है। खुद के मन में इच्छा हो न कि इन सब को ऐसा हो रहा है और मुझे क्यों ऐसा नहीं होता? तब फिर वह बुद्धि निकलने लगती है लेकिन

यह बुद्धि प्रविष्ट किस तरह हुई? लोगों ने एन्करेज (प्रोत्साहित) किया, इसलिए प्रविष्ट हुई। कोई काम सुलझ गया तो हम ऐसा समझते हैं कि बुद्धि हमें अच्छी तरह सँभाल लेती है, इसलिए वह प्रविष्ट हो गई। यहाँ पर (सत्संग में) बुद्धि नहीं है, इसलिए (सुननेवालों की) निकलने लगती है।

दिल को शांति देती है, ज्ञानी की वाणी

यह तो कैसा सुंदर काल आया है! भगवान के समय में सत्संग में जाना हो तो पैदल चलते-चलते जाना पड़ता था जबकि आज तो बस या ट्रेन में बैठे कि तुरंत ही सत्संग में आया जा सकता है! ऐसे काल में यह स्वरूप ज्ञान मिल जाए तब तो फिर काम ही निकाल लेना है न! आत्मानुभवी पुरुष कहीं पर हैं ही नहीं और कभी जब ऐसे पुरुष प्रकट हों तब तो काम निकाल ही लेना चाहिए। आत्मानुभवी पुरुष के अलावा अन्य किसी की वाणी दिल को ठंडक देनेवाली नहीं होती है और होगी भी नहीं!

खुद (स्व) के दोष दिखें वही कमाई का फल

सारी कमाई का फल क्या है? आपके दोष एक के बाद एक आपको दिखें, तभी कमाई की कहलाएगी। यह सारा ही सत्संग खुद को खुद के सभी दोष दिखें, उसके लिए है और खुद के दोष दिखें, तभी वे दोष जाएँगे। दोष कब दिखेंगे? जब खुद 'स्वयं' हो जाएगा, 'स्वस्वरूप' हो जाएगा, तब। जिसे खुद के दोष ज़्यादा दिखें, वह ऊँचा। जब संपूर्ण निष्पक्षपातीपन आए, इस देह के लिए, वाणी के लिए, वर्तन के लिए संपूर्ण निष्पक्षपातीपन उत्पन्न होता है तभी खुद, खुद के सभी दोष देख सकता है।

मुझे जगत् निर्दोष दिखता है। जब आपकी दृष्टि ऐसी हो जाएगी तब यह पज़ल सोल्व हो जाएगा। मैं आपको ऐसा उजाला दूँगा और इतने पाप धो डालूँगा ताकि आपका उजाला रहे और आपको निर्दोष दिखता जाए और साथ-साथ पाँच आज्ञा दूँगा। उन पाँच आज्ञा में रहोगे तो वह, जो दिया हुआ ज्ञान है उसे बिल्कुल भी फ्रेक्चर नहीं होने देगा।

बीज बोने के बाद, पानी नहीं दें तो....

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा आइडिया (ध्यान में) लाना पड़ता है। वह थोड़ा कठिन है।

दादाश्री : नहीं, वह होना चाहिए। रखना नहीं पड़े, अपने आप ही रहे। उसके लिए क्या करना पड़ेगा? उसके लिए मेरे पास (सत्संग में) आना-जाना पड़ेगा, और जो पानी डालना चाहिए वह डलता नहीं है, इसलिए यह सब कठिन हो जाता है। आप व्यापार में ध्यान नहीं दो तो क्या होगा व्यापार का?

प्रश्नकर्ता : डाउन (कम) हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, यह भी ऐसा है। ज्ञान ले लिया, उसके बाद पानी देना पड़ता है, तो पौधा बढ़ता है। छोटा पौधा होता है न, उसमें भी पानी डालना पड़े। तो कभी महीने-दो महीने में ज़रा पानी डालना चाहिए आपको।

प्रश्नकर्ता : घर पर डालते हैं (सत्संग करते हैं)।

दादाश्री : नहीं, लेकिन यदि घर पर डालो, तो वह नहीं चलेगा। ऐसा चलता होगा? रूबरू ज्ञानी यहाँ पर आए हों और आपको उनकी वैल्यू (क़ीमत) ही नहीं होती! स्कूल गए थे या नहीं गए थे? कितने साल तक गए थे?

प्रश्नकर्ता : दस साल।

दादाश्री : तब क्या सीखे वहाँ? भाषा! इस अंग्रेजी भाषा के लिए दस साल निकाले, तो यहाँ मेरे पास तो छह महीने ही कहता हूँ। छह महीने मेरे पीछे घूमे न (सत्संग में आए) तो काम हो जाए।

प्रश्नकर्ता : आपके पास छह महीने (सत्संग

में) बैठे, तब उसमें स्थूल परिवर्तन होगा? फिर सूक्ष्म में परिवर्तन होगा? ऐसा कह रहे हैं.....।

दादाश्री : हाँ, सिर्फ बैठने से ही परिवर्तन होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल परिवर्तन यानी क्या?

दादाश्री : स्थूल परिवर्तन मतलब बाहर के हिस्से की उसकी सारी मुश्किलें गायब हो गई, सिर्फ अंदर की रहीं! बाद में फिर यदि इतना सत्संग होगा तो अंदर की मुश्किलें भी उड़ जाएँगी। दोनों खत्म हो गए, तो हो गया संपूर्ण। अत: यह परिचय करना चाहिए। दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे, जितना जमा किया उतना तो लाभ। लोग ज्ञान मिलने के बाद ऐसा समझ लेते हैं कि अब हमें काम तो कुछ रहा ही नहीं! लेकिन (अभी) परिवर्तन तो हुआ ही नहीं है!

यहाँ सत्संग में बैठकर जो कुछ परिवर्तन हुआ लगता है वह विस्तार से समझ लेना चाहिए, और वही पुरुषार्थ है। 'ज्ञान' पोइन्ट टु पोइन्ट (जैसा है वैसा) धीरे-धीरे समझ लेना चाहिए।

सत्संग विलय करे गाँठें

जैसे-जैसे सत्संग होगा, वैसे-वैसे (पहले जो पूरण हुआ था वह) खाली होता जाएगा। अब खाली होने लगा है। पहले उन गाँठों को पोषण मिलता था और वे अधिक मोटी हो रही थीं। एक तरफ फूट भी रही थीं और दूसरी तरफ बढ़ भी रही थीं। *पूरण* (चार्ज होना) भी हो रहा था और *गलन* (डिस्चार्ज होना) भी हो रहा था। अब सिर्फ *गलन* हो रहा है। इसलिए हमने नक्की किया है कि, 'भाई, अब बाड़ में एक भी गाँठ नहीं रहने देनी है।' इसलिए ज्ञानीपुरुष कहते हैं कि, 'भाई, खोद-खोदकर निकाल दो। जहाँ बेल दिखे वहाँ गाँठ है। जहाँ तुरई की बेल दिखे, वहाँ पर तुरई है और कंकोड़ी (जंगली फल) कि बेल दिखे वहाँ पर कंकोड़ी है। उन्हें खोदकर निकाल दो। और फिर यदि आप मुझ से कहने आओ कि 'साहब, मैंने सभी (गाँठें) निकाल दी, अब मेरे यहाँ बेल नहीं उगेगी न?' तब हम कहेंगे, 'नहीं, अभी तो अगले साल देखना, कोई गाँठ अंदर रह गई होगी तो तीन साल तक देखना पड़ेगा, बस। फिर खत्म हो गईं। उसके बाद निर्ग्रंथ हो गए!'

अब गाँठों का *गलन* होता रहता है। यानी कि दस सेर की होगी तो आठ सेर की हो जाएगी। जो आठ सेर की होगी, वह सात सेर की हो जाएगी। सात सेर की छह सेर की हो जाएगी। ऐसे करते-करते खत्म होकर रहेंगी।

सत्संग में रहने से ही गाँठें विलय होती हैं, वर्ना जब तक सत्संग में नहीं रहें, तब तक गाँठों का पता नहीं चलता। सत्संग में रहने से वह (अंत:करण) निर्मल होती दिखेंगी। हम अलग रहे न! अलग रहकर शांति से देखने पर हमें सारे दोष दिखाई देंगे। वर्ना (ज्ञाता रहे बगैर) गाँठों में रहकर ही देखा करते हैं, इसलिए दोष नहीं दिखाई देते। इसलिए कृपालुदेव ने कहा है कि, 'दीठा नहीं निज दोष, तो तरिए कौन उपाय?'

यहाँ सत्संग में बैठने से आवरण टूटते जाते हैं, वैसे-वैसे दोष दिखते जाते हैं।

सत्संग में भाँति-भाँति का कचरा निकलता है। सामनेवाले के दोष देखने से, तो कचरा खुद को चिपक जाता है। अगर खुद के (दोष) देखे, तो वे दोष निकल जाते हैं। आलसी को दूसरों की भूलें अधिक दिखाई देती हैं।

अक्रम की अनोखी डिस्पेन्सरी

प्रश्नकर्ता : कुछ खास प्रकार की गाँठें विलय हो जाएँ, ऐसी गाँठें, फिर कठिन और वक्र गाँठें, टेढ़ी गाँठें, उनके बारे में कुछ बताइए कि वे कैसे विलय की जाएँ?

दादाश्री : हमारी दवाई ऐसी है न, कि सारी गाँठें विलय होती ही रहती है। हमें देखते रहना है। यह दवाई ठेठ मोक्ष तक ले जाए, ऐसी है। और सारा पुराना रोग निकाल देगी। संसार रोग को नाश कर देगी। संसार रोग जो क्रॉनिक (असाध्य) हो चुके हैं। क्रॉनिक यानी मूल गाँठ जैसी होनी चाहिए, उसके बजाय गाँठें टेढ़ी-मेढ़ी हो चुकी हैं। टेढ़ी-मेढ़ी यानी क्रॉनिक। जो दवाईंयों से भी ठीक नहीं हों, वैसी। तो यह जो ज्ञान है, इससे यह संसार रोग सारा मिट जाएगा और मोक्ष में ले जाएगा। इसलिए जैसे-जैसे समय बीतता है, वैसे-वैसे एक तरफ आरोग्यता उत्पन्न होती है, और फिर उसका अच्छी तरह से रक्षण भी करता है, वर्ना मोक्ष में जा ही नहीं सके न! यह काम अगर आपको सौंपा हो तो आपसे नहीं हो पाता। यह तो अंदर क्रियाकारी ज्ञान ही काम करता रहता है।

इसलिए टेढ़ी-मेढ़ी सभी गाँठें विलय हो जाती है। हमें देखते रहना है, कुछ करना नहीं है। मन में ऐसा नहीं रखना है कि ऐसा क्यों हो रहा है? अभी तक यह कम क्यों नहीं हो रही? हमें देखते रहना है। यदि हम उसे नहीं देखें तब 'भूल हुई,' ऐसा कहा जाएगा। हम उसका निरीक्षण नहीं करें, तब 'भूल हुई,' ऐसा कहा जाएगा।

सत्संग में कर्मों का बोझ घटता है

यहाँ 'सत्संग' में बैठे-बैठे कर्म के बोझ कम होते जाते हैं और बाहर तो निरे कर्म के बोझ बढ़ते ही रहते हैं। निरी उलझनें ही हैं। हम आपको गारन्टी देते हैं कि जितना समय यहाँ सत्संग में बैठोगे उतने समय तक आपके काम-धंधे में कभी भी नुकसान नहीं होगा और लेखा-जोखा निकालोगे तो पता चलेगा कि फायदा ही हुआ है। यह सत्संग, यह क्या कोई ऐसा-वैसा सत्संग है? केवल आत्मा हेतु ही जो समय निकाले, उसे संसार में नुकसान कहाँ से होगा? सिर्फ फायदा ही होगा। लेकिन ऐसा समझ में आए, तब काम होगा न! यहाँ सत्संग में कभी किसी समय ऐसा काल आ जाता है कि यहाँ पर जो बैठा हो, उसका तो एक लाख साल का देवगति का आयुष्य बंध जाता है या फिर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेता है! इस सत्संग में बैठे तो यहाँ पर आना यों ही बेकार नहीं जाता।

कर्म के उदय में लो आसरा सत्संग का

जब कर्म के उदय आते हैं, तब 'खुद' उदय स्वरूप बन जाता है! और उदय स्वरूप हुआ कि जागृति पर आवरण आ जाता है और खुद की भूल नहीं दिखती। लेकिन सत्संग में आता रहे तो भूमिका ढीली पड़ जाती है और उपयोग बढ़ता है। सत्संग कम रहे तो उपयोग आवरित होता रहता है।

कर्मों के वे उदय यदि बहुत भारी आएँ, तब हमें समझ लेना चाहिए कि 'यह उदय भारी है, इसलिए शांत रहो।' उदय भारी यानी कि फिर तो ठंडा करके सत्संग में ही बैठे रहना चाहिए, ऐसा तो चलता ही रहेगा। कैसे-कैसे कर्म के उदय आएँ वह कहा नहीं जा सकता!

नहीं होगा नुकसान, वह ज्ञानी की गारन्टी

मेरे पास सब व्यापारी आते हैं न, वे बहुत बड़े व्यापारी होते हैं। वे घंटाभर दुकान पर देर से जाएँ न, तो पाँच सौ हज़ार रुपये का नुकसान हो जाए, ऐसे। तो मैंने कहा जितने समय यहाँ आओगे उतने समय तक नुकसान नहीं होगा और यदि रास्ते में किसी दुकान पर आधा घंटा खड़े रहोगे, तो आपको नुकसान होगा। यहाँ आओगे तो जोखिमदारी मेरी। क्योंकि इसमें मुझे कोई लेना-देना नहीं है। यहाँ आपके आत्मा के लिए ही आए हो। इसलिए कहता हूँ सभी को, आपको किसी तरह का, नुकसान नहीं होगा अगर यहाँ आओगे तो।

अलौकिक सत्संग, यहाँ ज्ञानी के समीप

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को क्या गरज़ रखनी चाहिए, पूर्णपद (प्राप्त करने) के लिए?

दादाश्री : जितना हो सके उतना दादा के (ज्ञानी के) पास जीवन बिताना, वही गरज़, और कोई गरज़ नहीं। रात-दिन, चाहे कहीं भी लेकिन दादा के पास ही रहना। उनकी विसिनिटी (दृष्टि मर्यादा) रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम यह जो सत्संग करते हैं, वह पुण्य के विभाग में जाता है या शुद्ध कर्म के विभाग में जाता है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है न कि ये जो शुद्ध हुए हैं, अहंकार से विमुक्त हुए हैं, उनके लिए शुद्ध के विभाग में ही जाता है। और जिन्हें अहंकार है कि 'यह मैं हूँ' तब तक इसका फल यदि चाहिए तो सिर्फ पुण्य ही होता है। और यदि इस ('मैं नहीं हूँ' इस समझ) अनुसार बरते तो मुक्ति भी प्राप्त कर सकता है, बाकी, फल तो बहुत बड़ा पुण्य बंधन होता है। सच्चे आत्मा की बात सुनना, उस पर थोड़ी-बहुत श्रद्धा बैठना, वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है?

हम यहाँ सत्संग करते हैं न, यह जो बातचीत होती है न, उस घड़ी देवता सुनने आते हैं! ऐसी बात तो दुनिया में कभी भी हुई ही नहीं है। यह किसकी बात चल रही है? यहाँ पर किंचित् मात्र भी संसार की बात नहीं है, इस बात में संसार का हिस्सा बिल्कुल नहीं है, एक सेन्ट भी।

सत्संग से होती है, चित्त शुद्धि

प्रश्नकर्ता : क्या सत्संग से चित्त शुद्धि होती है?

दादाश्री : यह चित्त की शुद्धि ही कर रहे हो न! यह जो आप बोल रहे हो न, प्रश्न पूछ रहे हो न, वे चित्त की शुद्धि करने के लिए ही पूछ रहे हो। जैसे शरीर नदी में डूबकी लगाने से शुद्ध हो जाता है, वैसे सत्संग में पड़े रहने से मन और चित्त की शुद्धि होती जाती हैं। चित्त की शुद्धि ही होती रहती है और संपूर्ण शुद्ध चित्त हो गया वह है निर्विकल्प दशा।

चित्त शुद्धि का सब से अच्छा उपाय 'दादा' का प्रत्यक्ष सत्संग, और यहाँ तो निरंतर चित्त की शुद्धि होती ही रहती है। 'दादा' यहाँ पर हाज़िर हों और घर बैठे-बैठे चित्त शुद्धि करे, तो वह ठीक नहीं है।

सत्संग में चित्त हिलता नहीं है। चित्त तो रिलेटिव आत्मा है! चित्त ठिकाने पर रहे तो पूरा रिलेटिव आत्मा स्थिर हो जाता है और 'दादा' ने तो आपको रियल आत्मा दिया है! यह रियल आत्मा और रिलेटिव आत्मा दोनों आमने-सामने स्थिर बैठ जाएँ, तब फिर आपको मोक्ष ही बरतेगा न! इसीलिए तो सत्संग में बैठना है न! नहीं तो कितने ही बगीचे हैं, लेकिन सत्संग में बैठने से चित्त स्थिर रहता है और आत्मा स्थिर रहता है। यह तो संघबल है न? संघ के बिना तो कुछ भी नहीं हो पाता। संघबल चाहिए और जहाँ संघबल होता हैं, वहाँ पर मतभेद नहीं होता। इसलिए भगवान महावीर बहुत सारे व्यक्तियों का संघ करते थे। लोग जितने अधिक बढ़ते हैं उतना संघ बढ़ता है और उतना ही अधिक आत्मा स्थिर होता है। यदि तीन व्यक्ति हों तो उतना संघबल और अधिक व्यक्ति हों तो संघबल अधिक। 'इस' सत्संग के एक घंटे की तो बहुत ग़ज़ब की क़ीमत है!

सत्संग से अनावृत, दर्शन जागृति

प्रश्नकर्ता : क्या यह सही है कि अगर हम आपके वातावरण में, सत्संग में, सानिध्य में रहें तो हमारा अहंकार जल्दी खत्म हो जाएगा?

दादाश्री : अहंकार को खत्म नहीं करना है। अहंकार तो खत्म हो ही चुका है। आप में अब डिस्चार्ज अहंकार रहा है। अब सत्संग से आपकी समझ बढ़ती जाती है, दर्शन खुल जाता है, अन्वेइल्ड (अनावृत) हो जाता है। उसके लिए हमारे सानिध्य में आना चाहिए। तीन सौ घंटे, थ्री हंड्रेड अवर्स, तो फुल हो जाएगा, फुल मून (पूर्ण चंद्र)!

जैसे-जैसे आप यह सत्संग सुनते जाओगे न, वैसे-वैसे सारी परतें खत्म होती जाएँगी। अब आपके लिए सिर्फ सत्संग सुनना ही बाकी है। तो सत्संग में ज़्यादा जाना चाहिए। सत्संग में ज़्यादा यानी रेग्युलर। (ठीक रहेगा)।

प्रतिकूलता खत्म हो, ज्ञानी सत्संग से

प्रश्नकर्ता : सत्संग में आने के लिए घर में प्रतिकूलता हो तो क्या झूठ बोलें?

दादाश्री : घरवाले कहें कि सिनेमा देखने नहीं जाना है, तब भी तू जाता है। तब तू क्या कहा करता है? 'मैं कॉलेज जा रहा हूँ' ऐसा कहता है न? किसलिए ऐसा कहते होंगे? अब वहाँ हमें कपट करना आता है तो क्या इसमें नहीं आएगा? सबकुछ आता है।

यह सब झूठ ही तो है। यह जगत् झूठा ही है। सिर्फ आत्मा के लिए यदि झूठ बोलना पड़े, तो उसमें अपना आत्महेतु है। इसलिए आत्महेतु के लिए कभी कुछ झूठ बोलना पड़े तो वह ठीक है। क्योंकि उनसे प्रत्यक्ष झगड़ा करने के बजाय झूठ बोलना अच्छा है। झगड़ा करने से तो उनका मन टूट जाएगा। फिर दस-पंद्रह दिन बीत जाने के बाद उन्हें बता देना कि, मैं तो ऐसे झूठ बोलकर सत्संग में जाता था। इस तरह फिर धो देना। वर्ना तुझे जो मना करता है, उसे मेरे पास ले आना कभी बाद में, मैं उसे सही रास्ते पर ले आऊँगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि घरवाले उनकी पकड़ रखें और हम अपनी पकड़ छोड़ दें, तो सत्संग गँवाना पड़े। तो वहाँ पर क्या करना चाहिए?।

दादाश्री : ऐसे यदि सत्संग गँवाना पड़े तो अपनी पकड़ रखना लेकिन सत्संग मत गँवाना। फिर देख लेंगे। कम से कम नुकसान हो, वैसा धंधा करना चाहिए। कम से कम नुकसान यानी क्या कि सत्संग में जाए तो सौ का मुनाफा मिलता है। जबकि अपनी बात को पकड़े रखने का तीस रुपये दंड होता है, फिर भी सत्तर तो अपने घर में रहे न!

प्रश्नकर्ता : हम सत्संग में आते हैं, तभी कोई व्यक्ति अवरोध करता है, तो वह अवरोध क्या अपने कर्म की वजह से है?

दादाश्री : हाँ। यदि आपकी भूल नहीं हो तो कोई आपका नाम नहीं लेगा। आपकी भूलों का ही परिणाम है। खुद के ही बाँधे हुए अंतराय कर्म हैं। किए हुए कर्मों के सारे हिसाब भुगतने हैं।

हमारे भाव दृढ़ होंगे तो एक दिन वह पूरा होगा। अंतराय कर्म अचेतन हैं और हमें भाव चेतन को पाए हुए हैं, उससे अतंराय टूटते हैं। और 'ज्ञानीपुरुष' के पास से 'विधि' में माँगते रहना चाहिए कि हमारे अंतराय तोड़ दीजिए, तो वे तोड़ देंगे। 'ज्ञानी' का वचनबल आपके अंतराय तोड़ देगा। अंदर खेद रहे कि सत्संग में नहीं जाया जा सकता, उससे अंतराय टूटते हैं।

सत्संग में, 'दादा' के परम सत्संग में जाने को मन होता रहता है, इसे अंतराय टूटने की शुरूआत होना कहा जाएगा और वहाँ जाने में हरकत-रुकावट नहीं आए, उसे अंतराय टूट चुके हैं, ऐसा कहा जाएगा।

देहातीत परमात्मा की बेजोड़ शक्ति

प्रश्नकर्ता : अब मुझे यह समझाइए कि इस उम्र में आप दो घंटों तक लगातार बोलते हैं, इस उम्र में भी इतना भ्रमण करते हैं, इतना सत्संग करते हैं तो वह ऐसी कौन सी शक्ति है, वह मुझे जानना है?

दादाश्री : ऐसा है, राजा में यदि शक्ति नहीं हो तो चलता है लेकिन सेना के जवानों में शक्ति होनी चाहिए। राजा तो ऑर्डर करता है कि 'भाई, आप अब फलाँ लोगों के साथ लड़ाई करो।' बस, उसने इतना कहा न, फिर वे लोग अपनी खुद की

शक्ति से लड़ाई करते हैं। लेकिन वह 'बाइ ऑर्डर ऑफ द राजा' (राजा के हुक्म से) होता है। इसलिए 'बाइ ऑर्डर' सब होता है। भगवान से कुछ नहीं हो सकता।

यह सत्संग एक दिन के लिए भी बंद नहीं रहा। क्योंकि अगर बोल रह होते तो हम से बोला नहीं जा सकता था। पहले आवाज़ निकल नहीं पाती थी, लेकिन अब रोबदार निकल रही है। तब टैपरिकॉर्डर, पिन जैसे घिस गई हो, ऐसी बोलती थी जबकि अब मुझे ऐसा लगता है जैसे नई पिन लगाई हो।

पिन तो बहुत इस्तेमाल हो जाती है। यह तो टैपरिकॉर्ड बोलता है इसलिए शक्ति इस्तेमाल नहीं होती। यों तो इंसान दो घंटे से अधिक नहीं बोल सकता। जबकि मैं (रात के) साढ़े ग्यारह तक बोल सकता हूँ, टैपरिकॉर्ड है इसलिए!

वाणी रूपी धन तो वीतरागों का ही

इस देह में इतनी शक्ति है कि अभी यदि रात के तीन बज जाएँ, फिर भी कोई शिकायत नहीं करती। सत्संग होना चाहिए, सत्संग करनेवाले होने चाहिए, तो कोई शिकायत नहीं रहती। और मन में ऐसा भी नहीं होता कि चलो अब सो जाएँ बल्कि और ज़्यादा फ्रेश हो जाता है। जैसे-जैसे सत्संग करते हैं न, वैसे-वैसे फ्रेश होता जाता है, प्रफुल्लित रहता है क्योंकि अंदर यह भावना है कि लोग कुछ प्राप्ति करें! लोगों को प्राप्ति होती है और फिर खूब अहोभाव अनुभव करते हैं, बेचारे! अब तक उलझा हुआ था! अब वह उलझन दूर हो गई तो उसे अहोभाव होगा न! वर्ना लाख रुपए देने पर भी किसी के दु:ख नहीं जाते। वह तो बल्कि और ज़्यादा उलझनें पैदा कर देते हैं। उलझनें जाएँ तो दु:ख जाते हैं। अत: धन तो वीतरागों का ही है। वह बहुत मूल्यवान है न! ऐसी वीतराग वाणी रूपी धन दें तो उससे काम हो जाता है!

हम मालिक नहीं है, मन-वचन-काया के

'हम' यानी यह जो बाहरी दिखता है वह 'हम' नहीं हैं। यह जो दिखता है, उसके हम मालिक नहीं हैं। टाइटल भी हमारे पास नहीं है। मन के, वाणी के या देह के 'हम' मालिक नहीं हैं। 'हम' जब बोलते हैं, तब 'दादा भगवान' की बात करते हैं। हम जब एक खास स्टेज में होते हैं, तब 'दादा भगवान' और अन्य एक स्टेज में 'ज्ञानी' होते हैं। जो प्रश्नों के खुलासे देते हैं, वे 'ज्ञानी'। अत: जब सत्संग की बातें चलती हैं तब मुझे ज्ञानी की तरह रहना पड़ता है, वर्ना अभेद भाव से रह सकता हूँ। अर्थात् मैं भेदभाव और अभेद भाव दोनों तरह से रह सकता हूँ। जबकि संपूर्ण वीतराग तो अभिन्न भाव से ही रहते थे। हमारे में उतनी कमी हैं कि ज़रा इतना भेदभाव रहता है।

शुद्ध अभ्यास ज्ञानी सत्संग द्वारा

प्रश्नकर्ता : सच्चा शिक्षण तो आपके पास ही है।

दादाश्री : सच कह रहा है, सच्चा शिक्षण 'यही' है, असल शिक्षण 'यही' है। अत: यदि यह हम यहाँ पर पढ़ लें न, तो फिर 'शाला' में नहीं जाना पड़ेगा! मेरे पास से कुछ शिक्षण ले जाए न, तो फिर वह स्वतंत्र है और वह कितनी अधिक स्वतंत्रता है न!

वर्ना, पुस्तकों के पीछे पड़े रहे लेकिन पुस्तकें तो 'हेल्पर' (सहायक) हैं। वह मुख्य चीज़ नहीं है। वह साधारण कारण है, वह असाधारण कारण नहीं है। असाधारण कारण कौन सा है? 'ज्ञानीपुरुष'!

'ज्ञानीपुरुष' कि जो संपूर्ण निरीच्छक दशा में बरतते हैं! और उनकी दृष्टि का फल तो कैसा होता है? यहाँ सत्संग में आया, तो यहाँ से वह अवश्य दृष्टिफल लेकर ही जाता है।

अत: अगर आपके पास अधिक समय नहीं हो तो यहाँ सत्संग में पाँच-दस मिनट आकर दर्शन कर जाना, यदि हम यहाँ पर हैं तो! हाज़िरी तो देनी ही पड़ेगी न!

जिसके परिचय में रहें तदरूप हो जाएँ

यदि 'हमारा' संग नहीं मिलें तो हमारे वाक्यों का संग, वह सारा सत्संग ही हैं। सत्संग यानी शुद्धात्मा के रिलेटिव का संग, अन्य किसी का संग रखने जैसा नहीं है, फिर भले ही वह साधु हो, सन्यासी हो या कोई भी हो।

जिनके परिचय में रहें, उन्हीं जैसे हम बन जाते हैं। यहाँ साथ में बैठकर, ज़रा 'टाइम' निकालकर, विशेष रूप से बैठकर 'ज्ञानीपुरुष' से परिचय करना पड़ेगा।

जिसे दादा का निदिध्यासन रहता है, उसके तो सभी ताले खुल जाते हैं। दादा के साथ अभेदता, वही निदिध्यासन है! बहुत पुण्य होता है, तब ऐसा उदय आता है और 'ज्ञानी' के निदिध्यासन का साक्षात् फल मिलता है। वह निदिध्यासन, खुद की शक्ति को भी वैसी ही बना देता है, उसी रूप बना देता है। क्योंकि 'ज्ञानी' का अचिंत्य चिंतामणी स्वरूप है, इसलिए उस रूप बना देता है। 'ज्ञानी' का निदिध्यासन निरालंब बनाता है। फिर 'आज सत्संग नहीं हुआ, आज दर्शन नहीं हुआ।' उसे ऐसा कुछ भी नहीं रहता। ज्ञान स्वयं निरालंब है, वैसा स्वयं निरालंब हो जाना पड़ेगा, 'ज्ञानी' के निदिध्यासन से।

नहीं छोड़ना सत्संग, मार पड़े तब भी

क्या तुझे दादा याद रहा करते हैं?

प्रश्नकर्ता : दस प्रतिशत व्यवहार और व्यापार करता हूँ, बाकी नब्बे प्रतिशत दादा का निदिध्यान रहा करता है।

दादाश्री : ठीक है। मतलब नब्बे प्रतिशत यहाँ रहता है और दस प्रतिशत जितना ही सर्विस में रहता है न? तो ठीक है काम *निकाल* लिया है न!

प्रश्नकर्ता : अब तो हम मुक्त हो ही गए हैं। अब दिखता ही है, मुक्त ही लगता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन अभी तक इस जगत् का भय है न, आपको कुसंग मिल जाए तो। निरा कुसंग का ही वातावरण है। अतः कुसंग में यदि डूब जाए, तो थोड़ी मार खा जाता है। जितना हो सके, ज़्यादा से ज़्यादा उतना ही सत्संगियों (उनके समूह में) में पड़े रहना। भले ही गालियाँ दें, फिर भी उनके साथ पड़े रहना अच्छा है।

इस सत्संग में तो अगर मार पड़ रही हो, फिर भी मार खाकर भी यह सत्संग मत छोड़ना। मरना हो तब भी इस सत्संग में मर जाना, लेकिन बाहर नहीं मरना। क्योंकि जिस हेतु के लिए मरा, उसका वह हेतु जोइन्ट हो जाता है। यहाँ पर कोई मारता नहीं है न? मारे तो चला जाएगा? यह जगत् नियम सहित चल रहा है। अब इसमें किसी के दोष देखें तो क्या हो? क्या किसी का दोष होगा?

सत्संग द्वारा पहुँच सकेंगे, ध्येय समीप

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा होता है कि इस 'शुद्धात्मा' शब्द से जिसका हम लक्ष्य रखते हैं, शुद्धात्मा की वह शक्ति यदि इतनी सारी है तो फिर उसका अनुभव करने में इतनी देर क्यों लगती है?

दादाश्री : उसमें काफी टाइम लगता है उसके कई कारण हैं। जो प्रतिस्पंदन हो चुके हैं, वे सभी प्रतिस्पंदन जब शांत हो जाएँगे, तब हो पाएगा। अनंत जन्मों के प्रतिस्पंदन हैं।

अत: इतने उतावले होने की ज़रूरत नहीं। हमारी जो आज्ञा है न उतना ही करो। बाकी बहुत गहराई में उतरने जैसा नहीं है। वह तो अपने आप ही स्टेशन आकर खड़ा रहेगा। हम गाड़ी में बैठ गए हैं न, तो हमें गाड़ी छोड़नी नहीं है। फिर अपने आप

ही स्टेशन आ जाएगा। ये जो आज्ञाएँ हैं, वे हैं ही ऐसी। वह चल ही रहा है, निरालंब (स्टेशन) तक पहुँचने का, कभी न कभी ऐसी दशा आएगी ही।

अंत में सत्संग भी एक आलंबन

यह सत्संग कर रहे हैं, लेकिन आपको ऐसा ध्येय रखना चाहिए कि हमें ऐसे सत्संग तक पहुँचना है कि जहाँ हम खुद, अपने स्वयं के सत्संग में ही रह सकें। और किसी दूसरे की ज़रूरत न पड़े। इसके अलावा अन्य कुछ भी है तो वह अवलंबित कहलाएगा। दूसरे की ज़रूरत पड़ी कि अवलंबित हो गया और इसीलिए परतंत्र हो गया। और अगर परतंत्र हो गए तो हमें पूरा सुख नहीं मिल पाता! सुख तो निरालंब होना चाहिए। कोई भी अवलंबन नहीं होना चाहिए।

काम *निकाल* लो ज्ञानी की उपस्थिति में

'दादा' का यह संग, यह सत्संग तो शुद्धात्मा का संग है, सब से अंतिम संग यहाँ दिया जाता है। केवलज्ञान के अलावा अन्य कुछ भी नहीं दिया जाता। लेकिन यह काल ऐसा है न कि ३६० डिग्री तक की पूर्णता तक जाने नहीं देता। ज्ञान तो वही का वही है, लेकिन जो प्रवर्तन रहना चाहिए, काल के कारण वह रह नहीं पाता।

जब तक दादा (ज्ञानी) हैं तब तक सब हो सकता है, बाद में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा। उनकी गैरहाज़िरी में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा। जब तक वे हाज़िर हैं, तब तक हम उनकी विधियाँ करें, सत्संग करें तो इस सारे माल (कषाय-विषयरूपी) को खत्म कर दे। दादा (ज्ञानी) को देखने से ही कितने ही दोष खत्म हो जाते हैं! सिर्फ दर्शन करते ही कितने ही दोष खत्म हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। पहले मुझे अपनी भूलें हैं ऐसा नहीं लगता था। अब ढेरों दिखाई देती हैं। पूरे गोडाउन के गोडाउन भरे हों, ऐसा लगता है।

दादाश्री : ऐसा! गोडाउन भरकर माल है न! उसमें हर्ज नहीं है। दादा के पास आते हैं और जब तक सिर पर दादा हैं, तब तक किसी प्रकार की शंका नहीं रखनी है। सिर्फ अपने मन में ऐसा रहना चाहिए कि, यह छूट जाए तो अच्छा, छूट जाए तो अच्छा। माल पूरा खाली हो जाए तो अच्छा है, ऐसी भावना करो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन यह सारी खुराक कषाय ही खा जाते हैं, तो क्या करें?

दादाश्री : वे तो खाएँगे। फिर भी 'दादाजी' की छत्रछाया है, कृपा से सब चोखा हो जाए ऐसा है। खुद ही अगर इस सत्संग में से आगे-पीछे हो गए तो तुरंत ही चिपट जाएगा सब। आपको तो 'दादाजी' का आसरा नहीं छोड़ना है।

यहाँ बैठे-बैठे, परिवर्तन होता ही रहता है

प्रश्नकर्ता : हमने आप से ज्ञान लिया और इस सत्संग में आते हुए एक साल हो गया, इससे बाहर के वर्तन में भी परिवर्तन दिखता है। भाषा कठोर थी, उसके बजाए नरम होती जा रही है।

दादाश्री : अब जैसे-जैसे वह भरा हुआ माल कम होता जाता है वैसे-वैसे परिवर्तन दिखता है। लोग जैसा ढूँढते हैं, वैसा एकदम से नहीं मिल जाता। आपको खुद को पता चलता है कि कम होता जा रहा है। बाकी लोगों को तो चंदूभाई वैसे के वैसे ही दिखाई देंगे। इन सभी को कब दिखाई देंगे? जब यह सबकुछ खाली हो जाएगा, तब फिर उन्हें मन में होगा कि ये चंदूभाई अब पहले जैसे नहीं हैं।

यहाँ बैठे हो तो अगर कुछ नहीं करोगे फिर भी अंदर बदलाव होता ही रहता है क्योंकि सत्संग है। सत् मतलब आत्मा, उसका संग! यह प्रकट सत् है! अगर इसके संग में बैठे तो वह सर्वश्रेष्ठ सत्संग है। अन्य सभी भी सत्संग तो हैं लेकिन सर्वश्रेष्ठ सत्संग नहीं हैं। जैसे कि यह बॉम्बे सेन्ट्रल है, फिर यह गाड़ी आगे नहीं जाएगी।

सत्संग के संसर्ग में आज्ञा पालन

प्रश्नकर्ता : यह जो सत्संग करना है, क्या वह आज्ञा पालन के लिए ही करना है?

दादाश्री : सबकुछ आज्ञा पालन के लिए ही है। सत्संग से सभी कर्म ढीले हो जाते हैं। इसलिए आज्ञा पालन में सरलता रहती है। नहाने के बाद इंसान कैसा लगता है? आलस-वालस उसका चला जाता है न? उसी तरह सत्संग से सारा आलस छूट जाता है। संसार यानी निरे कुसंग की टोली! नापसंद हो, फिर भी उसमें पड़े रहना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : ये पाँच आज्ञा एक-दूसरे के साथ रहकर शुद्धात्मा के फेवर (तरफदारी) में किस तरह कार्य करती हैं, वह समझाइए?

दादाश्री : पाँच आज्ञा तो प्रोटेक्शन हैं। वर्ना यह कुसंग का वातावरण सबकुछ खा जाता है। ये आज्ञा प्रोटेक्शन हैं। ये आज्ञा आत्मा में कोई हस्तक्षेप नहीं करतीं। बाकी घर में, ऑफिस में, सर्वत्र इस कलियुग में कुसंग ही है। इन आज्ञाओं का पालन करें तो कुछ भी स्पर्श नहीं करता और निरंतर समाधि रहती है।

एक तो शुद्धात्मा का बही खाता, उसमें आज्ञा पालन करना और दूसरा, जिस सत्संग में हम आए हों उसमें, यदि बहुत देर हो रही हो तो, बहुत काम हो तो पाँच-दस मिनट के लिए भी आकर दर्शन कर जाना, यहाँ विधि कर जाना। जागृति ज़रा कम पड़ जाए न, तो यहाँ आकर विधि करवा जाओ न तो तुरंत चार्ज हो जाता है। आपके दोष आपको दिखाई देंगे। अभी यह दुषमकाल है न इसलिए लाइट डिम होती रहेगी। अखंड जागृति रहनी चाहिए।

हम ये ज्ञान देते हैं और आज्ञा में रहे तो जागृति उत्पन्न होती है। आज्ञा पालन से जागृति उत्पन्न होती है। यह जागृति तो है ही, लेकिन आज्ञा में नहीं रहने से ये ऐसे सब असर होते रहते हैं। जिससे वह जागृति चली जाती है।

निश्चयबल बढ़ाए जागृति

प्रश्नकर्ता : तो सत्संग से उसमें कुछ जागृति आएगी?

दादाश्री : हाँ, सत्संग में आए, रोज़ पड़ा रहे इस सत्संग में, तब उसका खत्म होगा। उसका उपाय ही सत्संग, सत्संग और सत्संग।

जागृति तो निरंतर रहनी चाहिए। यह तो दिन में आत्मा को बोरी में बंद रखते हैं, यह कैसे चलेगा? दोष देखते और धोते जाने से आगे बढ़ सकते हैं, प्रगति होती है।

प्रश्नकर्ता : सतत् ज्ञान की जागृति रखने के लिए अन्य किसी अभ्यास की ज़रूरत है?

दादाश्री : ज्ञान की जागृति सतत् रहती ही है। अन्य किसी अभ्यास की ज़रूरत ही नहीं है। आपके निश्चय में सिर्फ ऐसा रहना चाहिए कि यह सतत् रहनी ही चाहिए। क्यों सतत् नहीं लगती? तो दूसरे सभी कारण क्या अंतराय डाल रहे हैं, उसे देखना चाहिए। यानी कि ज्ञान की जागृति निरंतर रहती है, लेकिन आपका निश्चयबल होना चाहिए। 'जागृति नहीं रहती,' ऐसा बोला कि फिर नहीं रहती। 'रहनी ही चाहिए, क्यों नहीं रहेगी?' तो रहेगी और विघ्न आनेवाले हैं ही नहीं, आप सत्संग में रहना न!

असंग आत्मा लगा रहे संग-प्रसंग में

आपको आत्मा प्राप्त हुआ है, इसलिए आपको सत्संग में पड़े रहना चाहिए। यहाँ से फिर यदि कुसंग में घुसा कि यह रंग उतर जाएगा। कुसंग का ज़ोर इतना भारी है कि कुसंग में थोड़ी देर के लिए भी नहीं जाना और कृपालुदेव ने घर को कैसा कुसंग कहा है? कि उसे 'काजल कोठरी' कहा है! अब घर में रहना और असंग रहना, उसके लिए तो जागृति रखनी पड़ेगी। हमारे शब्दों की जागृति रखनी पड़ेगी। हमारी आज्ञा का पालन करे तभी घर में रहा जा सकेगा। इसके अलावा और कब असर नहीं होगा?

जब स्पष्टवेदन हो जाएगा, तब असर नहीं होगा और स्पष्टवेदन कब होगा कि जब 'संसारी संग' 'प्रसंग' नहीं रहेगा तब! 'संसारी संग' में एतराज़ नहीं है, लेकिन 'प्रसंग' में एतराज़ है। तब तक 'स्पष्टवेदन' नहीं हो पाएगा। संग तो इस शरीर का है ही, लेकिन फिर प्रसंग तो, यदि अकेले ऐसे चैन से बैठे रहना तो भी नहीं रह पाए। हमें तो यह संग ही बोझ समान हो गया है, तो फिर प्रसंग करने कहाँ जाएँ? यह संग ही अंदर से आवाज़ देता है, 'ढाई बज गए, अभी तक चाय नहीं आई!' है खुद असंग और पड़ा है संग-प्रसंग में!

कुसंग से दूर, वही सत्संग

प्रश्नकर्ता : दादा के महात्माओं को यह प्रश्न भी सेट करना पड़ेगा, व्यवहार कैसा रखना चाहिए? और जिसका आयुष्य लंबा हो, तो किस तरह शेष आयुष्य सँभला रहे और शुद्धात्मा का यह उपयोग रहे।

दादाश्री : नहीं, वह तो पिछला आयुष्य तो यहाँ पर जहाँ सभी सत्संगी रहते हों, महात्मा रहते हों न, उनके साथ ही रहना चाहिए यानी कुसंग से परे, वही सत्संग हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें टिके रह सकते हैं?

दादाश्री : टिके रह सकते हैं न! कोई नुकसान नहीं होता और घाटा नहीं होता, मुनाफा होता रहे।

जगत् की विस्मृति सिर्फ सत्संग से

केवलज्ञान भीतर सत्ता में है, लेकिन (आप में) आज उपयोग में नहीं आ रहा है। ये सत्संग करते हैं, तो उसे व्यक्त करते हैं। एक दिन संपूर्ण निरावृत हो जाएगा, तब संपूर्ण व्यक्त हो जाएगा! फिर मेरी तरह आपको भी आनंद जाएगा ही नहीं। आप कहो कि 'जा, यहाँ से', तो भी वह नहीं जाएगा।

यहाँ सत्संग में जो सारा आनंद होता है, वह निराकुल आनंद है। यहाँ पर आकूलता-व्याकूलता नहीं रहती। आकूलता-व्याकूलतावाले आनंद में क्या होता है कि अंदर झंझट चलता रहता है। यहाँ झंझट बंद रहता है और जगत् विस्मृत रहा करता है। अभी किसी चीज़ को लेकर आनंद आए तो हम समझ जाएँगे कि यह पौद्‌गलिक आनंद है। और यह तो सहज सुख! अर्थात् निराकुल आनंद। आकूलता-व्याकूलता नहीं। जैसे कि स्थिर हो गए हों, ऐसा हमें लगता है। थोड़ा भी उन्माद नहीं रहता।

ज्ञान लेने से पहले जो आनंद था न, वह तो विनाशी आनंद था। ज्ञान के बाद अब सच्चा आनंद उत्पन्न होता है। पहले हमारे सत्संग से और बातचीत से आनंद होता है, लेकिन वह कायम नहीं टिकता है। अब यह खुद का स्वाभाविक आनंद उत्पन्न होगा।

स्थूल को पार करके, सूक्ष्मतम में प्रवेश करो

प्रश्नकर्ता : आपकी गैरहाज़िरी में एकाग्रता इधर-उधर हो जाती है, तब क्या करें?

दादाश्री : जब तक दादा खुद होते हैं, तब तक वे स्थूल हैं। स्थूल तो मिला, लेकिन अब सूक्ष्म में जाना चाहिए और दादा हाज़िर नहीं हों तब तो सूक्ष्म (पाँच आज्ञा) का ही प्रयोग शुरू कर देना चाहिए और यह सूक्ष्मतर (अनुभव) और सूक्ष्मतम (ज्ञायक) में जाने का प्रयोग करना चाहिए। और आगे-पीछे तो होता ही नहीं है। रोज़-रोज़ यह रिकॉर्ड बजानी, वह क्या अच्छा कहलाता है?

यह जो परमात्म योग मैंने आपको दिया है उस योग में, जितना हो सके उतने उस योग में ही रहो। आप खुद परमात्मा बन जाओ, ऐसा योग दिया है! बीच में कोई रोक नहीं सकेगा और संसार की सारी रामायण पूरी हो जाएगी, अठारह व्यूह रचना का युद्ध जीत जाएँगे, क्योंकि शुद्धात्मा ही कृष्ण हैं और वे ही जितानेवाले हैं।

हमारी आज्ञा, वही 'हम' हैं, 'खुद' ही हैं। हमारी पाँच आज्ञा में रहने का प्रयत्न करो।

'ज्ञानी' के पास पड़े रहो

भगवान ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष से समकित प्राप्त होने के बाद ज्ञानी पुरुष के पीछे लगे रहना।

प्रश्नकर्ता : किस अर्थ में पीछे लगे रहना है?

दादाश्री : पीछे लगे रहना यानी यह ज्ञान मिलने के बाद और कोई आराधन नहीं होना चाहिए। हर एक जन्म में बीबी-बच्चों के अलावा और कुछ होता ही नहीं है न! लेकिन वह तो हम जानते हैं कि यह 'अक्रम' है। ये लोग बेहद फाइलें लेकर आए हैं। इसलिए आपको फाइलों के लिए मुक्त रखा है लेकिन उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि कार्य पूरा हो गया। आज-कल फाइलें बहुत हैं, इसलिए अगर आपको मैं अपने यहाँ रखूँ तो आपकी 'फाइलें' बुलाने आएँगी। इसलिए छूट दी हैं कि घर जाकर फाइलों का समभाव से *निकाल* करो, वर्ना फिर ज्ञानी के पास ही पड़े रहना चाहिए।

अनंत जन्मों की खोट इस एक जन्म में पूरी करनी है। उसके लिए ध्यान रखना चाहिए। खुद के बच्चों का ध्यान रखते हैं, शरीर का ध्यान रखते हैं, वैसे ही ज्ञानीपरुष कि जो हमें एक घंटे में मुक्ति दिलवाते हैं, वहाँ पर भी यदि हमसे ऐसा पुण्य सीधी तरह से प्राप्त नहीं हो तो हमें कुछ भी करके सीधा कर लेना चाहिए। यों ही यहाँ आकर पड़े रहना चाहिए, तब भी नुकसान खत्म हो जाएगा!

ज्ञानी पर कभी भी प्रेमभाव नहीं आया है। जब से ज्ञानी पर प्रेमभाव आ जाए तो, तभी से सारा हल निकल आता है।

बाकी, आप से यदि पूर्ण रूप से लाभ नहीं लिया जा सकता है, वह तो निरंतर, रात-दिन खटकते रहना चाहिए। भले ही फाइलें हैं और वह तो ज्ञानीपुरुष ने कहा हैं न, आज्ञा दी हैं न कि फाइलों का समभाव से *निकाल* करना, वह आज्ञा ही धर्म है न? वह तो अपना धर्म है। लेकिन यह तो खटकते रहना चाहिए कि ऐसी फाइलें कम हों, ताकि मैं लाभ उठा लूँ।

अब तो भयंकर यातनाएँ और भयंकर पीड़ा में से संसार गुज़रेगा। यह तो अंतिम उजाला इस 'अक्रम विज्ञान' का है। उसमें जिसका काम हो गया उसका हो गया। बाकी राम तेरी माया!

ज्ञानी के पास रहकर, खुद, अपने आप को देख सकें

इस सत्संग से निबेड़ा आएगा ही न! पूरी दुनिया की झंझट गई न! सत्संग से कुसंग के परमाणु निकल जाते हैं और नए शुद्ध परमाणु प्रविष्ट होते हैं। यानी जो इस सत्संग में पड़े रहें, उनका तो काम हो गया न!

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानी के पास ही पड़े रहो,' ऐसा जो कहा गया है, तो फिर क्या देखना है?

दादाश्री : पूरे दिन उनकी सहजता पूरे दिन देखने को मिलती है। कैसी सहजता! कैसी निर्मल सहजता है! कितने निर्मल भाव हैं! और अहंकार रहित दशा कैसी होती हैं, बुद्धि रहित दशा कैसी होती है, वह सब देखने को मिलता है। अहंकार रहित और बुद्धि रहित दशा, ये दोनों दशाएँ और कहीं तो देखने को मिलती ही नहीं न!

ज्ञान से सभी अवस्थाओं में आत्माध्यास

(अब सत्संग में आकर) इस ज्ञान को बारीकी से समझ लेना पड़ेगा। क्योंकि यह ज्ञान घंटेभर में दिया हुआ है। कितना उच्च कोटि का ज्ञान, जो ज्ञान एक करोड़ सालों में भी प्राप्त नहीं हो सकता, वह एक घंटे में प्राप्त हो जाता है! लेकिन बेसिक (बुनियादी) ही होता है। बाद में विस्तार पूर्वक समझ लेना चाहिए न?

जागृति, वही ज्ञान है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यदि ऐसा रहा करे तो वह भाव नहीं है, लेकिन वह लक्ष्य-स्वरूप है; और लक्ष्य मिले बिना 'मैं शुद्धात्मा

हूँ' ऐसा रहेगा नहीं। 'शुद्धात्मा' का लक्ष्य बैठना वह तो बहुत बड़ी बात है! अति कठिन है! लक्ष्य मतलब जागृति और जागृति वही ज्ञान है, लेकिन वह अंतिम ज्ञान नहीं है। अंतिम ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव ही है। केवलज्ञान स्वभावी आत्मा का लक्ष्य हो जाने के बाद उसकी जागृतिरूपी ज्ञान में रहना, वह सब से ऊँची और अंतिम भक्ति है, लेकिन हम उसे भक्ति नहीं कहते, क्योंकि उसे वापस सब अपने-अपने स्थूल अर्थ में ले जाएँगे। 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा प्राप्त कर लेने जैसी है, कृपाभक्ति की आवश्यकता है।

जैसा देहाध्यास हो गया है, वैसा ही आत्माध्यास हो जाना चाहिए। नींद में, गहरी नींद में भी आत्मा का भान रहना चाहिए। हम जो देते हैं, उस ज्ञान से सभी अवस्थाओं में आत्माध्यास ही रहता है। यह तो ग़ज़ब का ज्ञान है! जैसे दही को बिलोने के बाद मक्खन और छाछ दोनों अलग ही रहते हैं, वैसा ही यह ज्ञान है। देह और आत्मा अलग के अलग ही रहते हैं।

ज्ञान का स्वरूप समझने के बाद एकदम प्रवर्तन में नहीं आता। समझने के बाद धीरे-धीरे सत्संग से ज्ञान-दर्शन बढ़ता जाता है और उसके बाद प्रवर्तन में आता जाता है। प्रतर्वन में आने पर जब सिर्फ आत्म प्रवर्तन में आ जाए, वही 'केवलज्ञान' कहलाता है। दर्शन-ज्ञान के अलावा अन्य कोई प्रवर्तन नहीं हो, उसे 'केवलज्ञान' कहते हैं।

ज्ञानी के कृपापात्र बनना है

प्रश्नकर्ता : सत्संग में यहाँ सब बैठे हैं तो दादा भगवान की कृपा हर एक पर एक समान उतर रही होगी?

दादाश्री : नहीं, एक समान नहीं। आपको 'दादा भगवान' पर कैसा भाव है, उस पर आधारित है।

प्रश्नकर्ता : मानो कि मेरा बर्तन बड़ा है तो वह अधिक पानी लेगा और किसी का बर्तन लोटे जितना पानी लेगा। तो यह बर्तन पर आधारित है या भाव पर?

दादाश्री : उसमें बर्तन की ज़रूरत नहीं है। किसी को कुछ नहीं आता हो तो भी मैं कहूँ कि 'कुछ नहीं आता है तो यहाँ पर बैठे रहना भाई, जा वे जूते साफ करते रहना।'

ज्ञानी के कृपापात्र बनना है, और कुछ करना नहीं है। कृपा प्राप्त करने में क्या रुकावट डालता है? हमारी *आड़ाइयाँ* (अहंकार का टेढ़ापन)।

प्रश्नकर्ता : वे *आड़ाइयाँ* नहीं निकालनी चाहिए?

दादाश्री : नहीं, वे जल्दी लाभ नहीं होने देतीं। हम *आड़ाइयाँ* देखें वहाँ पर करुणा रखते हैं। इस प्रकार करुणा रखते-रखते *आड़ाइयाँ* धीरे-धीरे निकलेंगी। वहाँ अधिक प्रयत्न करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आपको सभी महात्माओं का सबकुछ ठीक करके जाना होगा। ऐसे ही हमें रास्ते में रोते छोड़कर जाएँगे तो नहीं चलेगा न?

दादाश्री : आप सभी को नक्की करना है कि जब सभी एक स्टेशन पर आकर बैठ जाएँ, तब कहना है कि 'जाईए दादा जी।' ऐसे सब भटक रहे हों, तब उन्हें आवाज देकर कह देना, 'आ जाओ, यहाँ पर! सब साथ में आ जाओ' ऐसा कहना।

हम देखते हैं कि जहाँ-जहाँ जिसने सच्चे दिल से पुरुषार्थ शुरू किया है, उन पर हमारी कृपा अवश्य बरसती ही है। आपने आगे कदम उठाए है और सच्चे दिल से पुरुषार्थ में लगे हो, तो हमारी कृपा उतरेगी ही। ज़रा नरम पड़ जाए तो वहाँ से उठकर अन्य जगह पर चले जाते हैं। हम कब तक बैठे रहें?

प्रश्नकर्ता : यदि वह नरम पड़ जाए तो उसे आपको आगे लाना चाहिए न?

दादाश्री : ऐसा करके लेते हैं लेकिन फिर से अगर वह नरम पड़ जाए तो फिर हम हट जाते हैं। अन्य जो चल रहे हैं उनका देखना है न! नरम पड़ ही कैसे सकते हैं? खुद की स्थिति नरम नहीं पड़नी चाहिए। सामने अड़चन आ गई हो तो वह अलग बात है, लेकिन खुद को तो स्ट्रोंग ही रहना चाहिए। ज्ञानी के पीछे फिरते रहते हैं तो कुछ निबेड़ा तो आएगा ही न?

सत्संग से बढ़े ज्ञान जागृति

प्रश्नकर्ता : दादा, (आपने) जो आत्मा दिया है न उसका पूरा-पूरा अनुभव पूरे दिन किस तरह से रह सकता है?

दादाश्री : हाँ। लेकिन जो उल्टा रहता था, वह सीधा रहने लगा इसलिए फिर आप पूछ-पूछकर आगे चलना शुरू करो न! वह जो पाँच सौ के नुकसानवाला है, वह पूरा हो गया। लेकिन जिसका पाँच हज़ार का नुकसान है, उसमें देर लगेगी, उसे आपको देखते ही रहना पड़ेगा न!

यह ज्ञान है ही ऐसा कि मोक्ष में ले जाए, लेकिन फिर आपकी जागृति से उसे बहुत हेल्प करनी चाहिए, पुरुषार्थ करना चाहिए। प्रकृति और पुरुष दोनों अलग हो गए हैं। जब तक आप 'चंदूभाई' थे, तब तक प्रकृति थी। वह प्रकृति जैसे नचाए वैसे 'आप' नाचते थे। 'आप' पुरुष बन गए और प्रकृति अलग हो गई। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। पुरुषार्थ में वह जागृति तो है ही, बाकी, पुरुषार्थ में क्या है? सिर्फ आपको नक्की करना चाहिए। स्थिरतापूर्वक सारी बातचीत करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा याद रहते हैं, लेकिन कितनी ही बार जब इन प्रवृतियों में रहते हैं, तब तन्मयाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : तन्मयाकार हो जाए तो उसमें हर्ज नहीं है। जो तन्मयाकार होता है, वह 'आप' तन्मयाकार नहीं होते हैं, वह तो ये 'चंदूभाई' होते हैं, लेकिन आपको ऐसा लगता है कि 'मैं' हो गया, इतना ही।

यह ज्ञान ही ऐसा है न, तन्मय होता ही नहीं है न! चंदूभाई तन्मय हो जाते हैं, उसे 'आपको' देखते रहना है और उस अभ्यास की ज़रूरत है। उसे सत्संग की ज़रूरत है। जैसे-जैसे आप हमारे पास आकर बैठोगे, वैसे-वैसे शक्ति बढ़ती जाएगी।

ज्ञानी के *राजीपा* की चाबी

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी सच्ची पहचान प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? और आपका *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करने के लिए हमें किस प्रकार पात्रता प्राप्त करनी चाहिए?

दादाश्री : *राजीपा* प्राप्त करने के लिए तो 'परम विनय' की ही ज़रूरत है, और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। 'परम विनय' से ही *राजीपा* मिलता है। ऐसा कुछ है ही नहीं कि पैर दबाने से *राजीपा* मिलता है। मुझे गाड़ियों में घुमाओ तो भी *राजीपा* नहीं मिलेगा। 'परम विनय' से ही मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : 'परम विनय' समझाइए।

दादाश्री : जिसमें विशेषरूप से 'सिन्सियारिटी' और 'मॉरेलिटी' (नैतिकता) हो और जिसे हमारे साथ एकता रहे, जुदाई नहीं लगे, 'मैं और दादा एक ही हैं' ऐसा लगता रहे, वहाँ सभी शक्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। 'परम विनय' का अर्थ तो बहुत बड़ा होता है। अपने यहाँ सत्संग में इतने लोग आते हैं, लेकिन यहाँ पर 'परम विनय' के कारण बिना नियम से सब चलता है। 'परम विनय' है, इसलिए नियम की ज़रूरत नहीं पड़ी।

जो हमारी आज्ञा में विशेष रूप से रहें, उन्हें परिणाम अच्छा मिलता है। उन्हें हमारा *राजीपा* प्राप्त हो जाता है। आप ऐसा परिणाम बताओ कि मुझे आपको मेरे पास बिठाने का मन हो।

करूणा भरा संदेश, महात्माओं के लिए.....

प्रश्नकर्ता : आपने वह उदाहरण बहुत अच्छा दिया। एक बिल्ली अपने बच्चों को मुँह में रखकर ले जाती है और बंदरिया से उसके बच्चे चिपक जाते हैं।

दादाश्री : चिपक जाते हैं, छोड़ते नहीं क्योंकि बंदरिया पंद्रह फुट की छलाँग लगाती है, लेकिन बच्चा आँखे मूँदकर चिपका रहता है। वह बच्चा समझता है कि, 'आपकी ज़िम्मेदारी नहीं, मेरी ही ज़िम्मेदारी है,' ऐसे चिपक जाता है। बंदरिया गिर जाए तो भी उसे कुछ नहीं होता, ऐसे चिपक जाता है। ऐसा सीख लेना है। पकड़ सकोगे?

प्रश्नकर्ता : इसी तरह पकड़ना है दादा को।

दादाश्री : लेकिन पकड़ेगा तब न?

प्रश्नकर्ता : दादा को पकड़े हुए ही हैं।

दादाश्री : पकड़ा है? आपने भी पकड़ा है न दादा को? आपको मुझ से लिपट जाना है, मुझे आपसे नहीं लिपटना है। बिल्ली के बच्चों को मुँह में रखकर ले जाने पड़ते हैं, और बंदरिया को? बच्चे माँ को छोड़ते ही नहीं फिर। वह यदि इस तरफ कूदे तो वह बच्चा उस तरफ नहीं कूदता, वह ऐसे पकड़कर रखता है! आप सब भी बंदरिया के बच्चों की तरह हमसे चिपके रहना।

बिजली की चमकार में मोती पिरो लो

अरे! जगत् में ज्ञानी कितने होते हैं? पाँच या दस? कभी ही किसी काल में ज्ञानी पैदा होते हैं। उसमें भी अक्रम मार्ग के ज्ञानी तो दस लाख सालों में एकाध पैदा होते हैं और वह भी ऐसे वर्तमान आश्चर्य युग जैसे कलियुग में ही! लिफ्ट में ही ऊपर ले जाते हैं। सीढ़ियाँ चढ़कर हाँफना नहीं है। अरे भाई, बिजली की चमकार में मोती पिरो ले! यह बिजली (ज्ञान प्रकाश) चमकी है तो तेरा मोती पिरो ले, लेकिन तब वह धागा ढूँढने जाता है। क्या हो सकता है? पुण्य कम पड़ जाता है।

शायद ही कभी ऐसा ग़ज़ब का पुरुष पैदा होता है, तब उसे खुद को बताना पड़ता है! यह तो, गारन्टी के साथ कहता हूँ कि आपका कोई *ऊपरी* (बॉस) नहीं हैं। और ऊपर भी तेरा कोई *ऊपरी* नहीं है। फिर क्या कोई डर-वर रहेगा?

दुबारा ऐसा संयोग नहीं प्राप्त होगा किसी जन्म में.....

यह अक्रम विज्ञान इतना अधिक फलदायी है, एक मिनिट भी टाइम कैसे खोएँ? फिर ऐसा जोग किसी जन्म में नहीं आएगा। इसलिए इस जन्म में पूरा कर लेना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह पूरा कर लेने को कहा, वह किस तरह?

दादाश्री : जो सत्संग हितकारी हो चुका है उसे एक क्षण के लिए भी भूलना नहीं चाहिए। जब मार्ग मिल जाए तब कहेगा कि ज़रा दो दिन ठहर जाता हूँ। अरे, ऐसा मार्ग मिलेगा नहीं और जब मिला है तब अगर बैठा रहे तो वह मूर्ख कहलाएगा।

किसी के भी प्रभाव में न आएँ, ऐसी दुनिया को तुझे एक तरफ रखना आए, उसे समर्पण भाव कहते हैं। यानी कि जो 'ज्ञानीपुरुष' का हो, वही मेरा हो, खुद की नाव उनसे अलग होने ही नहीं दे। जुड़ी हुई ही रखे। अलग हो जाए तो उलट जाएगा न! इसलिए ज्ञानी के साथ ही खुद की नाव जोड़कर रखना।

हम (ज्ञानी) जब तक हैं, तब तक और कहीं टाइम नहीं बिगाड़ना चाहिए। हम बड़ौदा जाएँ और जिसके वैसे अनुकूल संयोग हों और पैसे हों, उन्हें वहाँ पर आना चाहिए। जितना हो सके उतना हमारा (हमारे साथ) अधिक समय लेना। सिर्फ हमारे सत्संग में आकर बैठे रहना, और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है।

जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१७ अगस्त : अडालज त्रिमंदिर में पूज्य श्री के सांनिध्य में जन्माष्टमी उत्सव भव्य रूप से मनाया गया। त्रिमंदिर में पूरे दिन लगभग हज़ारों की संख्या में दर्शनार्थी आएँ। मुमुक्षुओं के लिए विशेष प्रोजेक्टर शो और बच्चों के लिए विशेष पपेट शो का आयोजन किया। शाम को पूज्य श्री ने त्रिमंदिर के पोडियम में दो घंटों तक दर्शनार्थिओं को दर्शन दिए। रात को भक्ति संध्या में चार हज़ार से भी अधिक महात्मा-मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। प्रोफेशनल कलाकारों द्वारा गाये गए कृष्ण भक्ति के और दादाई पदों से सभी महात्मा झूम उठे। पूज्य श्री ने भी दो पद गाए। रात को १२ बजे मटकी फोड़ द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया। तत् पश्चात श्री कृष्ण भगवान का पूजन और आरती की गई और भगवान को मक्खन-मिसरी का प्रसाद अर्पण किया गया। अन्य त्रिमंदिरों पर भी महात्माओं की हाज़िरी में उल्लास के साथ जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया।

२२-२९ अगस्त : अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर हॉल में आप्तवाणी ३ और ७ पर चार-चार दिनों का पर्युषण पारायण आयोजित किया गया। किसी को दुःख नहीं देना, मोल लिया हुआ दुःख, युक्तिपूर्ण व्यवहार वगैरह टॉपिक पर असरकारक सत्संग और सामायिकें हुईं। समग्र हॉल लगभग १२ हज़ार महात्माओं से पूरा भर गया था। संवत्सरी के दिन कईं महात्माओं ने आलोचना करके एक-दूसरे से माफी माँगी थी। जो गुजराती नहीं समझ पाते, ऐसे महात्माओं ने हिन्दी-अंग्रेजी भाषांतर कार्यक्रम का अनुपम लाभ लिया।

३० अगस्त : पारायण के बाद के दिन महात्माओं को पूज्य श्री का पूरे दिन दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, लगभग दस हज़ार महात्माओं ने इसका लाभ लिया। इस दौरान विधि, असीम जय-जयकार, भक्ति वगैरह द्वारा महात्मा उपयोग में रहे।

२-५ सितम्बर : पूज्य श्री के साथ आप्तसंकुल के भाईयों-बहनों की चार दिन की रिट्रीट राणकपूर में आयोजित हुई। इस दौरान विविध प्रवृतियाँ, सत्संग, दादा दरबार, राणकपूर तीर्थ दर्शन वगैरह कार्यक्रम हुए। पूज्य श्री के करीबी सांनिध्य से एक-दूसरे के साथ अभेदता और पॉज़िटिवनेस का सभी ने अनुभव किया।

६-८ सितम्बर : पहली बार राजस्थान के पाली शहर में पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम का आयोजित हुआ। जिसमें लगभग ६६० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय सेवार्थिओं और महात्माओं को पूज्य श्री का विशेष सत्संग-दर्शन का लाभ मिला। ज्ञानविधि पश्चात आप्तपुत्रों द्वारा किए गए फॉलोअप सत्संग में ज्ञान लिए हुए काफी महात्मा उपस्थित रहे।

९-११ सितम्बर : कोलकात्ता में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में ३६५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अन्य शहरों से भी लगभग १०० मुमुक्षु आएँ। सेवार्थी महात्माओं के लिए पूज्य श्री का सत्संग-दर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

१३-१५ सितम्बर : पटना में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में लगभग ५७० मुमुक्षुओं आत्मज्ञान प्राप्त किया। डी.डी. बिहार पर प्रसारित सत्संग के कारण समग्र बिहार में अच्छा प्रतिसाद मिला। पूज्य श्री के विशेष सत्संग-दर्शन से सेवार्थी सभी महात्माओं को अनुपम आनंद हुआ। फॉलोअप सत्संग में ज्ञान लिए हुए बहुत से नये महात्मा उपस्थित रहे।

१६ सितम्बर : दादानगर हॉल में आयोजित एक कार्यक्रम दौरान पूज्य श्री ने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी को आर्शीवचन दिए।

१८ सितम्बर : अमरेली त्रिमंदिर के श्री सीमंधर स्वामी भगवान अडालज त्रिमंदिर संकुल में पधारे और इस अवसर पर पूजन-भक्ति और आरती की गई तथा महात्माओं ने भगवान के भावपूर्वक दर्शन किए।

१९ सितम्बर : श्री सीमंधर स्वामी भगवान की अमरेली त्रिमंदिर में स्थापना हुई। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा हुई, जिसमें अमरेली शहर के बड़ी संख्या में महात्माओं ने उल्लास के साथ हिस्सा लिया।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी हिन्दी सत्संग कार्यक्रम

बेंगलोर

दि. **५ तथा ६ दिसम्बर** (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-**सत्संग** तथा **७ दिसम्बर** (रवि), शाम ५ से ८-३०-**ज्ञानविधि**
स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी. रोड. **संपर्क :** 9590979099

भोपाल

दि. **९ दिसम्बर** (मंगल), शाम ६-३० से ९ -**सत्संग** तथा **१० दिसम्बर** (बुध), शाम ५-३० से ९ -**ज्ञानविधि**
११ दिसम्बर (गुरु), शाम ६-३० से ९ **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : न्यू केम्पियन स्कूल ओडिटोरियम, ई-7, अरेरा कोलोनी, शाहपुरा लेक के पास. **संपर्क :** 9425676774

दिल्ली

दि. **१२ तथा १३ दिसम्बर** (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-**सत्संग** तथा **१४ दिसम्बर** (रवि), शाम ५ से ८-३०-**ज्ञानविधि**
स्थल : लौरेल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के पीछे, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. **संपर्क :** 9811332206

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - भोपाल** पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
- **'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
Dubai - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
Australia - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
New Zealand - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ दोपहर १२ से १२-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
USA-Canada-UK-Singapore - **'सब टीवी'** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
UK - **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में) - **नया कार्यक्रम**
Singapore - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
Australia - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
New Zealand - **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. **२३ अक्तूबर** (गुरु), रात ८-३० से १०-३० - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

दि. **२४ अक्तूबर** (शुक्र), सुबह ८-३० से १, शाम ४-३० से ६-३० - **नूतन वर्ष के अवसर पर दर्शन-पूजन-भक्ति**

दि. **१ नवम्बर** (शनि) - शाम ५ से ७-३० - **सत्संग** तथा **२ नवम्बर** (रवि), शाम ४ से ७-३० -**ज्ञानविधि**

दि. **२ दिसम्बर** (मंगल), रात ८-३० से १०-३० - **पूज्य नीरुमाँ के ७१वे जन्म दिन पर विशेष भक्ति**

परम पूज्य दादा भगवान का १०७वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. **५ नवम्बर** (बुध), शाम ५ बजे - **महोत्सव शुभारंभ**, रात ८ से १०-३० - **सत्संग**

दि. **६ नवम्बर** (गुरु), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६-३० - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

दि. **७-८ नवम्बर** (शुक्र-शनि), सुबह ९-३० से १२, रात ८ से १०-३० - **सत्संग**

दि. **९ नवम्बर** (रवि), सुबह ९-३० से १२ - **सत्संग** तथा शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : इफको कॉलोनी के पास, रोटरी सर्कल, गांधीधाम-आदिपुर रोड, **गांधीधाम (कच्छ)**. **संपर्क :** 9924348844

- महोत्सव स्थल रेल्वे तथा बस स्टेशन से 6 कि.मी. के अंतर पर है। स्थल पर पहुँचने के लिए ओटो-रिक्षा मिलेगी।

१) इस महोत्सव में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है । २) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ। ३) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं** । ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। ४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

जामनगर

दि. **१२ नवम्बर** (बुध), शाम ७-३० से १० -**सत्संग** तथा **१३ नवम्बर.** (गुरु), शाम ६-३० से १० -**ज्ञानविधि**

स्थल : प्रदर्शन ग्राउन्ड, सात रस्ता सर्कल, बस स्टेशन के पास, जामनगर. **संपर्क :** 9687630436

राजकोट

दि. **१५ तथा १७ नवम्बर** (शनि-सोम), शाम ७-३० से १०-**सत्संग** तथा **१६ नवम्बर.** (रवि), शाम ५-३० से ९-**ज्ञानविधि**

स्थल : म्यु. शोपींग सेन्टर ग्राउन्ड, गायत्रीनगर शेरी नं.-४, जलजीत होल के पास, बोलबाला मार्ग. **संपर्क :** 9879137971

वेरावल

दि. **१९ नवम्बर** (बुध), रात्र ८-३० से ११ -**सत्संग** तथा **२० नवम्बर.** (गुरु), शाम ७-३० से ११ -**ज्ञानविधि**

स्थल : श्रीपाल सोसायटी ग्राउन्ड, नई हवेली के सामने, हवेली चोक, वेरावल. **संपर्क :** 9228216025

ध्रांगध्रा

दि. **२३ नवम्बर** (रवि), रात्र ८-३० से ११ -**सत्संग** तथा **२४ नवम्बर.** (सोम), शाम ७-३० से ११ -**ज्ञानविधि**

स्थल : शीशुकुंज, नगरपालिका टाउन होल के सामने, ध्रांगध्रा. **संपर्क :** 9428239439

अडालज त्रिमंदिर

आप्तवाणी-3 तथा 7 (गुजराती) पर सत्संग शिविर (पारायण)

दि. **२० से २७ दिसम्बर** - सुबह ९-३० से १२-४५ तथा शाम ४-३० से ७, रात ८-३० से ९-३० (सामायिक)

दि. **२८ दिसम्बर** - सुबह ९-३० से १२ - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से शाम ७ के दौरान) पर दि. ३० नवम्बर २०१४ तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

अक्तुबर २०१४
वर्ष-९ अंक-१२
अखंड क्रमांक - १०८

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 31-12-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

Absolutely Revered Dada Bhagwan's 107th Birthday Celebration

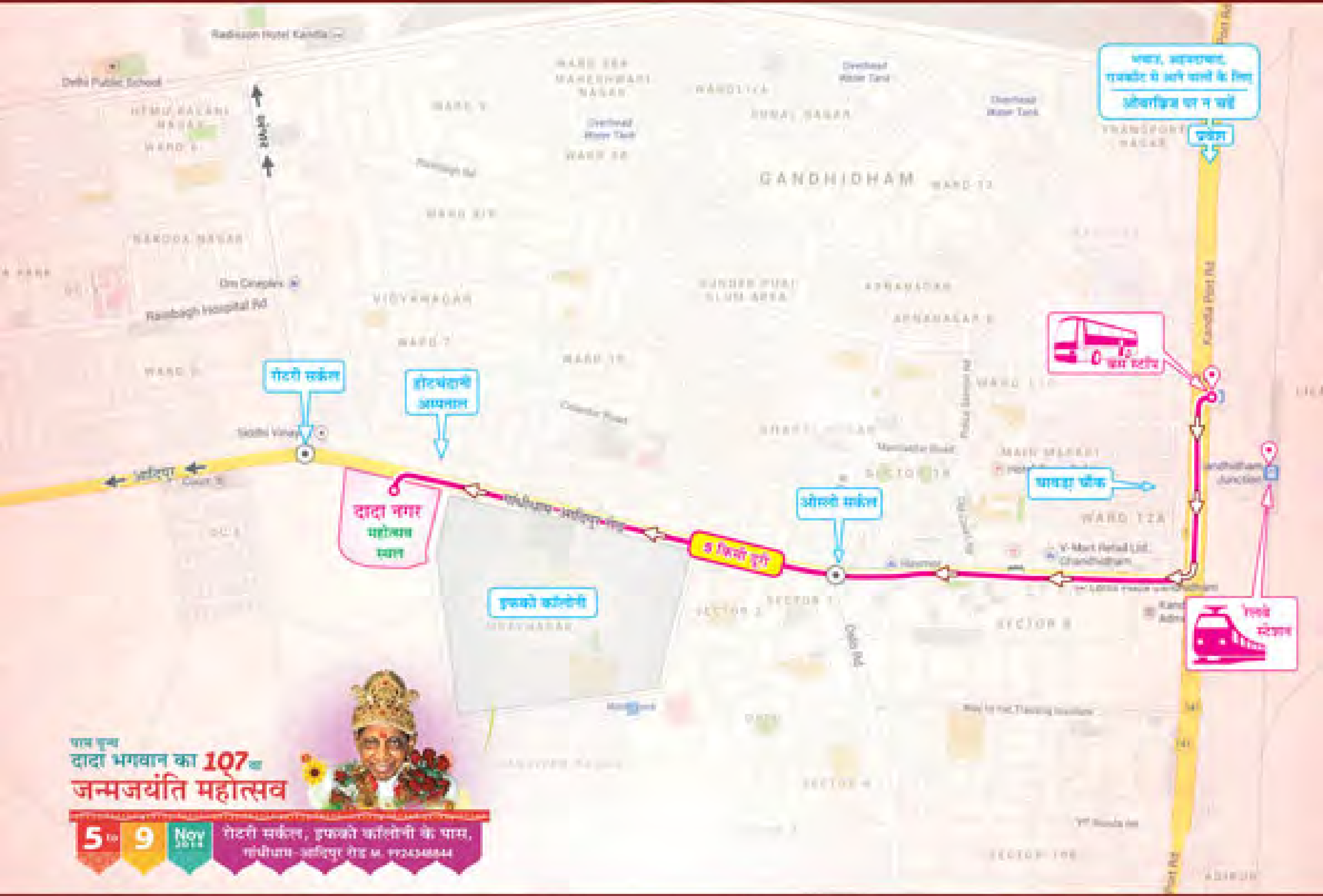

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.